चेष्टा समस्त विश्रामको करनेवालो सोई पाकारि जितनाम मेघनाद भयो अर्थात् सब असुरन्ह विषैं रावण मुख्य है तैसे यहां मोह जो अपने स्वरूपको अज्ञान सो संसार केशको हेतु है रावण के पीछे कुम्भकर्ण है तैसे अहंबुद्धि भायौ भायौ तब बिश्रामको हरनेवालो जो कामता को उदय होत है यह काम है लोभ जोसो अतिकाय नाम राक्षस है अर्थात् बड़ो शरीर जा को सो अतिकाय तैसे लोभहु के विस्तारको संख्या नहीं मत्सर जो असहन तासों महोदर नाम दुष्ट रूप है क्रोध जो पापरूप सो बिबुधान्तकारी नाम देवान्तक है द्वेष जो अवरजीवतें विरोधकरनो सोई दुर्मुख नाम है दंभ जो आडंबर अङ्गतकरणो सो खरनाम है कपट जो वचन और मन और सो अकं-पननाम है दर्पगुप्त गर्वको सोजसो मनुजादि नाम मद जो प्रगट गर्व सो शालपानि नाम है यह पूर्वोक्त जो सब असुर सो अमितबल हैं तथा परमदुर्जय नाम दुःखोंकरि जीतबे योग्य नहीं अर्थात् अतिकाय आदि शूलपाणि अन्तपर्य्यन्त यह सब लंकामों मुख्य हैं तैसे इहां शरीर विषै लोभ आदि मध्य अन्त पर्यन्त मुख्य हैं तथा दुर्जयादि गुणको समता है क्रोधादिको अर्थ पीछे लिखि आये हैं तेहते इहां नहीं लिखे षड्वर्ग जो काम क्रोध लोभ मोह मद मत्सर पूर्वक है तेह सहित गोनाम जो दशो इन्द्री सो जातुधानी नाम राक्षसी भईं अर्थात् पूर्वोक्त राक्षसिन्हको रमण अपनी २ स्त्रीमो होत है तैसे इहां लोभादि जो असुररूपता को रमण इन्द्रीरूपो जो स्त्रीवर्ग तामो होत है अर्थात् इ-न्द्रिन्हकी प्रवृत्ति मो लोभादिको विलास है इहां इन्द्रिन्ह विषै राक्षसी की समता एह हेतु है कि जब इन्द्री सब लोभादि जो निषेधताको ग्रहण करती भईं तेहिते राक्षसी की समता कहे यह भाव है इहां पर्यंत ऊपर को सामग्री कहिकरि अब मुख्य बात जो कहनो सो कहत हैं शरीररूप जो ब्रह्माण्ड तामो प्रवृत्तिरूप जो लंका तेहविषै जीव जो भगवत नाम तुम्हारे अंघ्रिनाम चरण को सेवक विभीषण रूप सो बसत हैं पूर्व जो दुष्ट भोहरूप रावणादि कहे सोई अटवी नाम बनभयो ताके मध्य मो चिन्तातें ग्रसित होकरि अर्थात् कबयह दुष्ट अटवी तें निकलेंगे यह चिन्ता है जेह जीवरूप विभीषण को तथा द्वादश नियम द्वादश यमु सोई सकल सुरलोक जो देवलोकादि और लोकेश जो आठौं लोकपाल तद्रूप भये सो पूर्वोक्त जो लंकेश नाम रावणताके वश होकरि हेनाथ अत्यन्त त्रसित ह्वैगये अर्थात् शुद्धिके

हेतु जो यमनियमादि सो मोहादिके प्राबल्यतें गुप्तह्वै गये समस्त ब्रह्माण्डको संकटमें देखि तबश्रीरघुबरको अवतार होतहै अनुभवरूप जो सिद्धिज्ञान सोई अवधेशनाम श्री महाराजा दशरथजू सिद्धाभक्ति शुभनाम मंगलरूपा सोई गृहगेहनी नाम कौशल्याजू तननाम तहां पृथ्वी के भारहर्त्ता जो श्रीरामजू ताको अवतार नाम आविर्भाव भयो अर्थात् ज्ञान भक्तिके उदयमो परमेश्वर को आविर्भाव होतहै यहभावहै तबभक्त जो जीवरूप बिभीषणताको संकष्ट नाम अतिकष्ट देखिकरि पिताके वाक्य को छलनाम कर्त्ता अर्थात् ज्ञानको प्रेरणाकरि गमनकरतभये गहननामबनमें अर्थात् बनरूप जो हृदय तामे अपनो प्रकाश करत भये इहां स्वरूप वो ऐश्वर्यको प्रकटकरणो यही गमनकरणो कह्यौ तहां बानर भालु को सहायचाहिये सो कैवल्य जो मोक्षताको अनेक जो साधनक्षमा करुणा विवेकादि अखिलनाम संपूर्ण भालु बानरको विपुल नाम समूहभयो ज्ञान जोभाव जन्य साधन ज्ञानसोई सुग्रीव भयो तेह सहायकरि कियो है समुद्रमें बांधको अर्थात् पूर्वोक्त जो असुरसब ताके नाशकरबेके अर्थ ज्ञानादि जो अपनी फौजताको प्रबलकरत भये इहां जलधिरूप जो शरीरतामें ज्ञानादिको प्रबल होनो यही सेतुसदृशभयो अन्यसाधनतें साधना ज्ञानश्रेष्ठहै तेहहेतुतें सुग्रीव को ममता कियो अब जो महाबीर न होयतौ लंकाको जय होनो नहींसंभवहै सो प्रबल जो वैराग्य अर्थात् ब्रह्मलोक के ऐश्वर्य पर्यन्त अरुचिसोई दारुणनाम कठिन प्रभंजनतनै नाम वायु पुत्र महावीरभये सो महावीर अशोकबाटिकाकों जलावत भये इहां नाना जो विषैरूपरस गन्धादि सोईबन तथा भवन नाममन्दिर इवनाम सदृशभयो ताके जलाइबेकों धूमकेतुनाम अग्नितुल्य महाघोररूप जो वैराग्य अर्थात् पहिले महावीरको गमन करि दुष्टन्ह कों बध करतभयेबनको विध्वंसकिये पश्चात् श्रीरघुबरको गमन तबसमूल रावणादिको नाशभये तैसेयहां प्रथम वैराग्यको उदय तेह करि लोभादि को नाश तथा नाना विषय बासना रूप बनको विध्वंस तेहके पश्चात् ज्ञान भक्ति को उदय तेह हेतु करि भगवत स्वरूप प्रकाश तब समूल मोहादि को नाश तेह पीछे जैसे विभीषण को राज्याभिषेक तैसे जीव को भगवत प्राप्ति रूप राज्याभिषेक यह क्रमहै इहांपर्यन्त जीवके संसारको स्वरूपकहिकरि पश्चात् ताके

नामको उपाय पूर्वोक्त सर्ब साधन संपत्ति करि तब भगवान के स्वरूपको आविर्भाव यह रीतिकरि दुष्ट जो दनुजेश रावण ताको निर्बंशके कर्त्ता राम जो विभीषण तेहके अर्थतेह प्रसंग तें समस्त विश्वके दुखको हरणकरतभये इहां विश्वशब्दतें भक्तमात्रको ग्रहण है काहेको भगवत आविर्भावकरि असुरन्हको नाशभक्तनके आनन्दादिको उदयहै। तथा यह पदविषै प्रथमबाह्य लंकाको रूपक द्वितीय अन्तरङ्गशरीरके सामग्रीको रूपककहैतैसे भगवानको दो रूप एकनिर्गुण द्वितीयसगुण सो लंकाकेरूपकसो सगुण रूपराजकुमारको आविर्भावहै अन्तरंग शरीरके रूपकसो निर्गुण रूपके आविर्भावको योजनाहै यह भावहै सो कैसेहैं रघुबर बोधके एकरासि नाशमसूहसो अनुजजो लक्ष्मणजू निजनाम अपनो भाईतथा श्रीजनकनन्दिनी महारानी सहितहरिजो श्रीरघुबरसोसर्वकाल मेंतुलसीके हृदय कमलमें बासकरें जेहतें पूर्वोक्त असुरन्ह करि क्लेश न होय यह प्रार्थनाहै ॥ ५८ ॥

मू० । देवदीनउद्धरणरघुबर्य्यकरुणाभवन शमनसन्तापपापौघहा-
री । बिमलविज्ञानविग्रहअनुग्रहरूपभूपबरबिबुधनर्मदख-
रारी। संसारकान्तारअतिघोर । गंभीरघनगहनतरकर्मसं-
कुलमुरारी । बासनाबल्लितखरकंटकाकुल बिपुलनिबिड़बिट
पाटवीकठिनभारी। बिबिधचितवृत्तिखगनिकरसेनोलूकका-
ककङ्कगृध्रआमिषअहारी । अखिलखलनिपुनछल छिद्रनिर-
खतसदाजीवजनपथिकमनखेदकारी। क्रोधकरिमत्तमृगराज
कन्दर्पमददर्पवृकभालुअतिउग्रकर्मी । महिषमत्सरक्रूरलोभ
शूकररूपफेरुछलदम्भमार्जारधर्मी । कपटमर्कटबिकटव्याघ्र
पाखण्डसुखदुखमृगबाततत्पातकर्त्ता । हृदयअवलोकियह
शोकशरणागतंपाहिमापाहिभोबिश्वभर्त्ता । प्रबलअहंकार
दुर्घटमहीधरमहामोहगिरिगुहा निबिड़ांधकारं । चित्तबै-
तालमनुजादमनप्रेतगणरोगभोगौघवृश्चिकबिकारं । बिषै-
सुखलालसादंशमसकादिखलझिल्लिरूपादि सबसर्प स्वामी-
तत्रअपक्षिप्ततवबिषमपायानाय अधमयमन्दव्यालादगामी
घोरअवगाहभवआपगापापजलपूरदुःप्रेक्ष्यदुस्तरअपारा । म-
करखंडवर्गगोनक्रचक्राकुलाकूलशुभअशुभदुखतीव्रधारा । स-
कलसंघट्टपोचसोचबससर्वदादास तुलसीबिषमगहनग्रस्तं ।

त्राहि रघुबंश भूषण कृपाकर कठिन कालबिकराल कलि
त्रासत्रस्तं ॥ ५८ ॥

टी० । रघुवर्य्यनाम रघुवंशी कुलमों श्रेष्ठ अवबनतें संसारको रूपककरतहैं हेदेव संसाररूपजो कांतारनाम बनअत्यन्त घोरनाम भयानकअर्थात् बनमोंबटपार व्याघ्रादिक्रूर जीवसबरहतहैंतासो रूपक आगेकहैं तेहतेंभयानकगंभीरनामजामोंस्पष्टनसूझैघननाम निबिड़ अर्थात् जामों सावकासनमिलै गहननाम कठिन अर्थात् दुखदाई शुभ अशुभ नाना जोकर्म सोई तरुनाम वृक्षतेहकरि संकुलनाम व्याप्त है यह बनहे मुरारि जबहमभयो तब ता चहिये सोजोबासना विषय भोगादिको सोई वल्लीनाम लताचढ़ि रहीहै जंगलमों कांटाहोतहै इहांजेह विषयमोंबासनाभई तेहिके नहीं मिलबे मों आकुल नाम आकुलता सोई खरतीक्ष्ण कांटकरूप है बिपुलनामबड़ी तथानिबिड़ बिटपको वृक्ष ताकी अटवीभारीनाम अति कठिन है अब जंगलके क्रूरजीवन्हकों देखावत हैं बिबिध जो चित्तकी वृत्तिपर स्त्री परद्रव्य हरणादि सोई पक्षिनके समूह सो कौन पक्षी तेहको कहतहैं सेननाम बाज उलुकआदि लैकरि मांसाहारी अर्थात् क्रूरजीव अन्यजीवन्हको नाशकरि दुखदाईहोत हैं तैसे पूर्वोक्त जोचित्त वृत्तिनिषद्धरूप अन्यजीवन्ह को सोऊ दुख देतहैं यह समता भयी इहां अनेक जोखल अन्यकी निन्दा तथा हानिमों तत्पर अत्यन्तनिपुण छलकरबेमों और लोगदेवेकों छिद्र नाम सावकाश देखत रहतहैं सर्वदा यद्वाछिद्र नाम दोष देखत रहतहैं सोई खल रस्तागीर जो जीव जनताकी मनको खेदकरने वाले अर्थात् बटपार रूप हैं जैसे औसर जानिकरि ठगप्राणादि कों हरतहैं तथा खलन्हकी करणी है क्रोधजो सोई उन्मत्त हाथी है अर्थात् उन्मत्तभये ज्ञानभ्रष्ट होतहै तैसो क्रोधमों विचारनहीं रहत कन्दर्पजो कामसोई मृगराज सिंहहैअर्थात् सिंह सब पशुन को नाशकरत है तैसे कामको उदयभये सब गुणको नाशहोत है मदजो प्रगटगर्व सोई वृकनाम हुंडारहै अर्थात् हुंडार अपने ते अबलजो भेड़ीछेरी ताकोनाशकरतहै तैसे गर्वतेंजो अपने ऐश्वर्यादि करि हीन जीव ताको दुख देतहैं दर्पजो गुप्त गर्व सोई भालूरूप अत्यन्तहै।उग्रकर्म जाको अर्थात भालुहिंसक नहीं है पर जोहिके ऊपर।क्रोधकरै है ताको फारिडारिहैं तैसे गुप्तगर्व जाको हो सब

कोनहींलच्छितहोतहै पर जासोंव्यवहारको संबंध भयो सो दुख रूपदेखतहै मत्सर जो असहनता सोई महिषनाम भैंसा क्रूरस्वभाव है अर्थात् जो भैंसा काहूको मारतहै सो व्यर्थ काहेकि मांसअहारी नहीं है तथा सबतेंक्रूरस्वभाव है तैसे असहन स्वभाव जाको सो काहूको भलोनहीं देखिसकतहै तथा असहनताकरि औरको बिगाड़ो अपनो कछु लाभनहीं यहसमताहै लोभजो सोई सूकर रूप अर्थात् सूकरको निषिद्धभोजन है तथा पशुनमें अति अज्ञ होतहै सो जाको अतिलोभ भयो ताकोकहूं ते लेनो कौन कार्य करनो यह विचारनहीं रहतयह सादृश्यहै छलजो सोईफेरुनाम श्रृगालहै अर्थात् श्रृगाल असंगलरूपहै यात्रादिजो मंगल कार्य तामें बोलिकरि अपनो रूपदेखाय हानिकरत तैसे छली उपायतें नाशकरत हैं दंभजो आडंबर भीतर और बाहर और सोई मर्जार रूप बिलाय को धर्म है अर्थात् बिलाव प्रत्यक्ष मनुष्य के देखते वस्तुको नहीं भक्षणकरै है सूनेसो खायलेहै तैसेदंभीजगत के देखायबेको प्रत्यक्षमो विषयन्याको त्यागदेखावत हैं एकांत मों भोगकरि लेतहैं तथा बिलाव चुपहोकरि समाधिकी नाई एकाग्र बैठतहै धोखादेकरि चूहेकों खायलेतहै तैसे दंभी एकांतमों बैठि नानासाधनको आडंबर देखावतहै औसर पायकरि परद्रव्य परस्त्री लैलेतहै कपट जोबाहरप्रियता अन्तष्करण क्रूरता सोई विकटमर्कट नाम बानररूप है अर्थात् बानर अत्यन्त नम्रभयेरहत है क्रोधभये काटिखातहै तैसे कपटीऊपरतें मिल्यौ रहतहै समय पाय नाशकरत है पाखण्ड बनावटी को स्वभाव कर्तव्यता ताकों सुख जो आरंभ दुखदाई जो सोई व्याघ्र है मृग जो पशुब्रात नाम समूह ताको उत्पातकर्त्ता अर्थात व्याघ्र को देखिकरि पशुसब भागजातहैं जो निकट मिल्यो ताकोंखातहै तैसे पाखण्डतें जो दूरगयो सो बच्यो जो भूलिकरि निकट रहतहै ताकों नाशहोतहै यह समताहै अपने हृदयमो यहशोककों देखिकरि अर्थात् संसाररूपबन को जो रूपक कहेसो अपने हृदयमो देखतहौं तेहतें आपकेशरण विषै आगतंनाम प्राप्तभये पालनकरो मोकों पालनकरि भोसंबोधनहै तथा विश्वभर्ता पाहिपाहि दोबार कहे ताको यह हेतहै कि पूर्वोक्त संसार को रूपककहे सो विचार अति त्रास भयो है तातें दोबारकहे बनमें पर्वतहोतहै ताकों रूपक कहतहैं दृशां

प्रबलजो अहंकार सोई दुर्घटनाम दुःखोंकरि लांघवे योग्य नहीं महिधर नाम पर्वतहै अर्थात् पर्वतके लांघवेमों बड़ोक्लेश होतहै तैसे सर्व साधनकरि जोक्लेशसो अहंकार जीतवे के अर्थहै महा मोह जो सोई पर्वतको कन्दरा निबिड़ अंधकार जामो अर्थात् कन्दरामो कोई पदार्थ देखि नहीं परत तैसे मोहके आवरणमो अपनोस्वरूप नहीं सूझतहै वनअसगुण होतहै इहांचित्तजो सोई बेतालहै अर्थात् वैतालगनकोवायुसमान गतिहै तैसेचित्त इन्द्रियों कोसके विषयको स्मरण करतहैं मनुजादनाम जो दैत्यगन सोई इहांमन है अर्थात् दैत्यनको बलवेग बेप्रमान है तैसे मनको है प्रेतगन सोइहां रोगहै अर्थात् जाकोप्रेत लगेहैं ताकोदुखदेत हैं तैसेरोग दुखदाई है भोगके जोसमूह सोईष्टिकनाम चोंकी को विकारहै अर्थात्चोंकीको व्याप्तहोते देरनहीं होततैसे भोगादि चित्तसोंव्याप्तहोकर आवरणकरलेतहैं विषयसुखकी जो लालसा सोईदंस मसकादि भये अर्थात् दंस मसकके लगेतें निद्रा कर जोसुख ताकोनाश होतहै तैसेविषयविषैं जब अभिलाषभये। तब स्थिरताकर जोसुखसोगयो तथा इहांखलजो मनुष्यसोइ झिल्लीच नाम झींगुर भये अर्थात् झींगुरको शब्द उत्कट है तैसे खलनको बोली सुनिकर दुखहोतहै रूपादिजो शब्दस्पर्श रूपरसगंध सोई सब अनेकजातिके सर्पहैं हेस्वामी अर्थातसर्पके काटेतें मृत्यु होत है तैसेरूपादि जेविषय ताको स्वादरूप जोविष तेहके लेनेते परमेश्वरकों भूलिकर आयुर्बल व्यर्थ व्यतीत होतहै सोई मृत्यु भयो यह समता है तबनाम तहां आक्षिप्तनाम डारि दियो तुम्हारी जो विषम मायाताने होनायसो मैं अंध नाम चक्षुकरि हीनयथा मंदनाम बुद्धिहीन अर्थात् जोनेत्रहोंय तो जंगलतें बाहर होनेकी प्रतीति होतिहै तथा जो बुद्धिमान होंय तो बुद्धितें कछु उपाय निकलवेका करेंसामैं दोऊकर चौपटहों हे व्यालादगामी नाम गरुड़गामी अब जङ्गलमो नदी होतिहै ताकोरूपक करतहैं घोर नाम भयानकतथा अथाह संसाररूप जोआपगानामनदी तामें नाम जोपाप सोईजलरूप तेहकरि पूरनामपूर्ण सोहस ऐसे जीवनको दुःखोंकरि देखवे योग्य नहीं तथा दुःखोंकरि लांघवे योग्य नहीं जाकोपार नहीं सूझेहै तामें षड्वर्ग जो काम १ क्रोध २ लोभ ३ मोह ४ मद ५ मत्सर ६ सोई मगर रूपहैं गोइन्द्री सब

सोई नक्र नामनाक तथा चक्रनाम कच्छप तेहंकार आकुला नाम व्याप्तजो नदी कहैतौ किनारा चहियेसो शुभ अशुभजो कर्म सोई कूलनाम दोऊकिनाराहैं पुनःदिनाशरूप जोतीव्रदुखसोई धाराहै जेहनदीको अर्थात् शरीररूपजो ब्रह्माण्डतामें अन्तःकरणरूप जो संसारनदी ताको आपके कृपापात्र पारहोतहैं हमऐसेजीवतो आं-खितें देखिभी नहींसकैं अरुज्ञान भक्तिवैराग्यादि जो पार होवेको उपायसो अपनेको प्राप्तनहीं साहसकरि जो पैरवेके बलतें पैठे तो मकरादि जो जन्तु सोखायलें जो भाग्यतें तिन्ह जन्तुन्हतें बचैं तौतीव्रहै धारा जाको नामबहतेर डूबिमरै हेस्वामीयहसकल संघटजोसमूह पूर्वकहेसो पोचनामक्षुद्र अर्थात् दुखरूपतेहते पोचकेवससर्वकाल तुलसीदासहैं विषमनाम कठिनगहन जो बन संसाररूप पूर्वकहै ताने ग्रस्तंनाम लीलिलियो ताको पालनकरो हेरघुवंश भूषणकृपा के आकरनाम खानिकठिन जो कलिकाल ताको बिकरालनाम भयानकत्रास तेहकरि त्रस्तंनाम डर्‌यो हैं। यह अर्थहै ॥ ५९ ॥

मू०। देवनौमिनारायणंनरंकरुणायनंध्यानपारायणंज्ञानमूलम्। अखिलसंसारउपकारकारणसदयहृदय तपनिरतप्रणतानु-कूलं। श्यामनवतामरसदामद्युतिबपुषछबि कोटिमदनार्क अगणितप्रकाशम्।तरुणरमणीयराजीव लोचनललितवदन राकेशकरनिकरहासम्। सकलसौंदर्य निधिविपुलगुणधाम बिधिवेदबुधशंभुसेवितअमानम्। अरुणपदकंजमकरन्दमन्दा-किनीमधुपमनिष्टन्दकुर्वन्तिपानम्। शक्रप्रेरित घोरमारमद भङ्गकृतक्रोधगतबोधरतब्रह्मचारी। मारकण्डेयमुनिवर्यहित कौतुकीबिनहिंकल्पान्तप्रभुप्रलयकारी।पुण्यवनशैलसरिबद्रि-काश्रमसदासीनपदमासनंएकरूपम्। सिद्धियोगीन्द्रवृन्दार-कानन्दप्रदभद्रदायकदरशअतिअनूपम्। मानमनभङ्गचितभङ्ग मदक्रोधलोभादिपर्वतदुर्गभुवनभर्त्ता।द्वेषमत्सरराग प्रबलप्रत्यू-हप्रतिभूरिनिर्दयक्रूरकर्मकर्त्ता।बिकटतरवक्रक्षुरधारप्रमदा तीव्रदर्पकन्दर्पखरखड्गधारा। धीरगम्भीरमनपीरकारकतत्र केवराकावयंबिगतसारा।परमदुर्घटपन्थखलअसङ्गतसाधनाय नहिंहायवरबिरतियष्टी। दरशनारतदासत्रसितमायापाश त्राहिहरि त्राहिहरिदासकष्टी। दासतुलसी दीनधर्मसंबल

हीनअमितअतिविद मतिमोहनाशी ! देहअवलम्बनविलम्ब
•अंभोजकरचक्रधरतेजबलमर्मराशी ॥ ६० ॥

टी० नरनारायणजू को हम नमस्कार करैहैं कैसेंहैं करुणा के गृहध्यानमें पारायणंनामतत्पर अर्थात् अपनेस्वरूपको आपैध्यान करतहैं समाधिकरि ध्यानकरनेकह्योतातें ऐसोसन्देह नहोय कि जीव कोटिमोंहैतेहहेतुतें कहत हैं ज्ञान जो बोधताके कारणसम्पूर्ण जो संसारताकेउपकारके हेतुकरिदयायुक्त हृदयजाको तपस्यामें तत्पर भक्तन्हके ऊपरसानुकूल चन्द्रमाके किरणकोजो समूह तद्दत हास्यजाको यहांकिरण अह्लादकरहै तथा प्रकाशगुणहै यहदोऊ गुण लै करिउपमाहास्यविषै कविसबदेत हैं जाकेचरण कमल का रसजोगङ्गाजू ताको भ्रमररूप जो मुनि समूहसोपानकरतहैं श्री-नारायणस्वामी की अतिदुस्तर तपस्या देखिकरि इन्द्रको अतिभय भयोकि मेरोस्थान लेबेकों तपस्याकरतहैं तेहतपस्याके भङ्गकेवास्ते इन्द्रकरि प्रेरितनाम भेजाजो भयानक मार नाम काम देव ताके मदको भङ्गकरतभये क्रोधरहित अर्थात् कामदेव अप्सरन्हकेसहित अनेक कलाकरिके हास्यो तबत्रसित ह्वैकरि चरण कमलके ऊपर गिर्‍योहै तहांऐसेउ अपराधीके ऊपर क्रोधन भयो और सत्कार करि बिदाकिये बोधमेतत्पर होकरि ब्रह्मचर्य को ग्रहणकिये बैठे हैं बद्रिकाश्रममें मारकण्डेयके जो मुनिवर्य नाम श्रेष्ठ ताके अर्थ कौतुकीनाम लीलाके मूर्ति कल्पान्त वितरैक प्रलयकरि प्रभु जो समर्थ सो देखावत भये अर्थात् मार्कंडेय जू अति कठिन तपस्या किये तेहतपस्याके फलदेबेको नर नारायणजू प्रकट भये कहाकि जो इच्छा होय सो बरदानमांगो तबमार्कंडेयजू मांगे कि हमको अपनीमाया दिखलावो तेहमाया देखलाइबेके निमित्त मायाकृत प्रलय देखावतभये यह अर्थहै पवित्रवन पर्वतनदी जेह बद्रिकाश्रम में तहांसर्वदा आसीननाम बैठे पद्मासनकरि एकरूपंनाम सर्वदा एकरस अबबद्रिकाश्रमको मार्गअति कठिन ताको रूपक कहत हैं हेदेवमान जो अभिमान सोई मानभङ्गनाम पर्वतमद जोगर्व सोई चितभङ्गनाम पर्वतभयो क्रोधंलोभादिमों और रास्ताके पर्वत दुर्ग नाम कठिन हैं हेभुवन भर्त्ता द्वेषमत्सर राग जो विषयमें अभि-लाषसोई रास्तामें प्रबल प्रत्यूहनाम विघ्नप्रतिनाम प्रत्येक अर्थात् भिन्न भिन्न भूरि नाम समूह दयाकरि रहित क्रूर कर्म के करने

वाले अर्थात् जो अपने अंतष्करण में मत्सरादि दोष सोई रास्ता को नानाक्रूरजीव बटपार व्याधादि सहशमये हे देव विकट तर नाम अत्यन्त बक्रनाम टेढ़ा चुर धारनाम जोपर्वत तत्तुल्य प्रमदा जोस्त्री तीव्र है हृदय जाको तथा कंदर्प जो काम ताको दर्प जो गर्व सोई खड़्गधार नाम पर्वत है सो यह पूर्वोक्त जो कठिन सामग्रीसो बड़े जो धीर गंभीर हृदय जाको ताहूके मनको पीरनाम दुख के करने वाले तननाम तेहरास्ता में बराकानाम बेचारा वयंनाम हमरो जीव विगतमारा नामबलहीन अर्थात् साधनरूप जोबल तेहकरि रहित सोकीनाम केहगिनती सोहैं देवपरम दुर्घट नाम कठिनरास्ता जो संगभलो होयतो कठिन राहभी कटैहैसोखल मत्सरादि असंगत नामसंग करबेयोग्य नहीं सोई साथमें तथा नहींहै हाथमो श्रेष्ठ वैराग्यरूप यष्टी नामलाठी अर्थात् सहाय होनऊ होय और हाथमोलाठीहोय तोकठिनमार्गमो जानेको अवलंब होतहै सोइहां वाहूको अभावहै अरु आपको जो दर्शन ताकेअर्थ आरत हैं। अर्थात् कबदर्शन होयगो यह उत्कंठाकरि सर्वथा आरतहैं। तथा आपके मायारूप पास जो बंधन तेहकरि चसितताको हेहरि पालनकरो यहदामकष्टीनाम कष्टसोप्राप्त है दासजोतुलसी सो दासकरि दीन धर्मरूपं सबल जो कलेवा तेह करि हीनरास्ताके काठिन्यकरि थमित नामभारी श्रमभयो यह हेतुतें अतिखेदको प्राप्तापर सतिकोमोहने लीलि लियोहै अब सर्व उपायते रहितनिरालम्ब आपको पुकारेहै सो अशरण शर-णादि जोबानाताको स्मरणकरि अपनेहस्तकमलको अवलंब देहि नामदेव अर्थात् मेरेहाथको पकड़ो बिलम्बनकरो बिलंब किये ते तुलसीनष्ट होतहै इहांगोसाईंकी चतुराईहै किअवलंबको बहा-नोकरि हाथपकड़ावतहैं यह हेतुकी सामान्य जीव जाको बांह पकरेहैताको नहींछोड़त साक्षात त्रैलोक्य स्वामी सो बांह पकड़ि करिकब छोड़ेंगे यहभाव है·तथा गोसाईं कहतहैं कि चेत आप ऐसा कहो कि तुम्हारे संग विषैं बहुत बटपारादि क्रूर जीव हैं इनते कलह को करे सो चिन्तामति करो काहे कि चक्रसुदर्शन को धारण किये हो तथा तेजबल सर्भनाम सुखके रासिभूत हो। सर्व प्रकारतें समर्थ हो। चानकरबेको यह अर्थहै ॥ ९० ॥

मू॰। देवसकलसुखकंदआनन्द बनपुण्यकृत बिंदुमाधव द्वंद्वविपति

हारी। यस्यांघ्रिपाथोजअजशंभुसनकादिशुकशेषमुनिवृन्दअ-
लिनिलयकारी। अमलमरकतश्यामकामशतकोटिछविपीत
पटतड़ितइवजलदनीलम्। अरुणशत पत्रलोचन विलोकनि
चारुप्रणतजनसुखदकरुणार्द्रसीलम्। कालगजराजमृगराज
दनुजेश बनदहनपावकमोहनिशिदिनेशम्। चारिभुजचक्र
कौमोदकीजलजदरसरसिजोपरियथाराजहंसम्। मुकुट
कुण्डलतिलकअलकअलिव्रातइवभृकुटि द्विजअधर बरचारु
नासा। रुचिरसुकपोलदरग्रीवसुखसीवहरिइंदुकरकुंदमि-
वमधुरहासा। उरसिवनमालसुविशालनवमंजरीभ्राज श्री-
वत्सलांछनउदारं। परमब्रह्मण्यअतिधन्यगतमन्युअजअमित
बलविपुलमहिमा अपारं। हारकेयूरकरकनककंकणरतन
जटितमणिमेखलाकटि प्रदेशम्। युगलपदनूपुरा मुखरकल
हंसवतसुभग सर्वांग सौंदर्यवेशम्। सकल सौभाग्य संयुक्त
त्रैलोक्य श्रीदक्षदिशिरुचिरवारीशकन्या। बसत बिबुधाप-
गानिकटतटसदनवरनयननिरखंतिनरतेतिधन्या। अखिल
मंगलभवननिविड़संशयशमन दमनवृजिनाटवी कष्टहर्त्ता।
विश्वधृतविश्वहितअजितगोतीत शिवविश्वपालनहरणविश्व
कर्त्ता। ज्ञानविज्ञान वैराग्य ऐश्वर्यनिधि सिद्धअणिमादिदे
भुरिदानम्। ग्रसतभवव्यालअतित्रास तुलसिदासत्राहिश्री
रामउरगारियानम् ॥ ६१ ॥

टी०। यस्यनाम जेहिके चरणकमलविषैं ब्रह्मादि अलिनामभ्रमर
होकरनि लयनामगृहकियेहैं लालशतपत्र जोकमल तैसा नेत्रविलो-
कनिहैसुन्दरतेहकरिप्रणतजनकेसुखदाता तथाजो चितवनिकरुणा
रसकरि आर्द्र शील नाम भीग्यौ स्वभाव जाको अर्थात् कृपा रूप
कटाक्षहैभक्तनका जोकालसोई हाथीरूपताकेनाश करबेकोसिंह
रूपदनुजेश जोरावणादि सोईवनभये ताकेजलाइबेको अग्नि रूप
तथामोहरूपी रात्रिके नाशकरबेको सूर्यचारों जोभुजातामेंचक्र
सुदर्शन कौमोदकीनाम गदाजलज जो कमल दरनाम शङ्ख इहां
हस्तविषैं ताकी उत्प्रेक्षा करतहैं सरसिज जो कमल सदृशहस्त
ताके ऊपर राजहंस जैसे शंख शोभतहै हाथविषैं कुन्दके फूलकी
उपमा केवल विकास गुण लैकरि कवि सब देत हैं गतमन्यु
नामक्रोधरहित दोनों चरणमेंनूपुरको जोशब्द सोई मुखर नाम

वर्वर कलहंसको नाईं वेसंनाम वेषयहपदविषैं काशीमेंश्रीविंदु-
माधवजूताकोध्यानवर्णनकरतहैं त्रैलोक्यको श्रीनामशोभा तामें
दक्षदिशनाम दहिने भागमें सुन्दर लक्ष्मीजू शोभतिहैं सर्वभग-
वत्रूपके ध्यानमेंशक्तिको ध्यान बामभागमें होतहै केवल विंदु-
माधवजूके ध्यानमेंलक्ष्मीजूको दाहिनेओर वर्णन करतहैं विबुधा-
पगाजोगंगाजू ताकेनिकट किनारेपर श्रेष्ठमन्दिरमें बसेहैं वृजिन
नामपाप ताकोअटवीजोसमूह तथाकष्टके हर्त्ता बिबुधके धृतनाम
धारणकर्त्ता शिवनाम मंगलरूप उरगारिनाम गरुड़ सोईहै यान
नाम सवारी जाकों अन्यत समस्त स्पष्टहै ६१ ॥

मू० । इहैपरमफलपरमबड़ाई । नखसिखरुचिरविंदु माधवछबि
निरखहिंनयनअघाई । विशदकिशोरपीनसुन्दरवपुश्यामसु-
रुचिअधिकाई । नीलकञ्जवारिदतमालमणिइन्हतनतेंदुति
पाई । मृदुलचरणशुभचिन्हपद नखअतिअद्भुतउपमाई ।
अरुणनीलपाथोजप्रसवजनुमणियुतदलसमुदाई । जातरूप
मणिजटितमनोहरनूपुरजनसुखदाई ।जनुहरउरहरिविविध
रूपधरिरहेवरभवनबनाई । कटितटरटतिचारुकिंकिणिरव
अनुपमवरनिनजाई । हेमजलजकलकलित मध्यजनुमधुकर
मुखरसोहाई । उरविशाललघुचरणचारुअतिसूचत कोमल
ताई । कांकनचारुविविधभूषणविधिरचिनिजकरमनलाई ।
जयमणिमालवीचभ्राजतकहिजातनपदिकनिकाई । जनुउड़
गणमण्डलवारिदपरनवग्रहरचीअथाई । भुजग भोगभुजदण्ड
कंजदरचक्रगदाबनिआई । शोभासीवग्रीवचिबुकाधरवदन
अमितछबिछाई । कुलिशकुन्दकुंडल दामिनिद्युतिदसननि
देखिलजाई । नासानयनकपोललुलित श्रुतिकुण्डलभ्रूमोहिं
भाई । कुञ्चितकचसिरमुकुटभालपरतिलककहौंसमुझाई ।
अलपतड़ितयुगरेखइन्दुमहं रहितजिचञ्चलताई । निर्मल
पीतदुकूलअनूपमउपमाहिंयनसमाई । बहुमणियुतिगिरि
नीलशिखरपरकनक बसनरुचिराई । दक्षभाग अनुरागस-
हितइन्दिराअधिकललिताई । हेमलताजनुतरुतमालढिग
नीलनिचोलउढ़ाई । शतशारदाशेषश्रुतिमिलिकरिशोभा
कहिनसिराई । तुलसिदास मतिमन्दद्वंदरति कहैकौन
विधिगाई ॥ ६२ ॥

टी०। बिशद जो निर्मल किसोर नाम षोड़शवर्षकी अवस्था सर्वदा रहत है पीनन नाम मोटो शरीरके श्यामताको बर्णन करत हैं नील जो कमल ताको चिक्कनता तथा विकाससहित जो मेघ ताको गंभीर श्यामता तमालके दलकी श्यामता युक्त काश श्याममणिको झलक अन्यच जहां यह चारों उपमान होंय शरीर उपमेय होय तहां उपमानको गुण उपमेयमें बर्णन होत है इहां तब विपर्यय कहत हैं कि यह चारोंने यह शरीरतें दुतिपाई है अर्थात् अपने अपने गुणकों पाये हैं इहां शरीरै उपमान भयो कमल आदि चारों उपमेय भये यह अर्थ है कोमल जो चरण मंगलरूप चिन्ह जामें पदज नाम अंगुली तापर जो नख ताको अति अभूत नाम जो कबहीं भयो नहीं तैसी उपमा है लाल अरु श्याम पाथोज जो कमल तेहतें प्रसव नाम उत्पन्न जैसे मनिसंयुक्त पत्तनके समूह अर्थात् एक कमल सो ऊपर श्याम नीचे लाल होय तैसो चरण पृष्ठ श्यामरंग तरवा लाल वर्ण तेह कमलके दल सदृश अंगुली भई तेह दलनके ऊपर जैसे मणिजटित होय तद्वत् नख भये सो कमल दोरंग तथा कमल के पता मणि जटित नहीं होत यही अद्भुत भयो जातरूप जो सोना मणिजटित मनको हरणवालो जो नूपुर तासो रव जो बोलत है ताको उत्प्रेक्षा करत हैं जैसे शिवजूके डरकरि हरिनाम कामदेव विविधरूपको धारण करि रह्यो है. ये घर बनायकरि अर्थात् कामदेव शिवजूको अपराधी जान विचार्यो कि भगवानके चरण शरण बिना कोई हम बचेंगे नहीं यह हेतुकरि नूपुररूप घर सोरवा रूप होकरि पैठ्यो है नूपुरको जो शब्द मधुर सो जैसे भीतरतें कामदेव बोलै है कि हे भगवान् आपके चरणके शरण भये रक्षा करिये इहां नूपुरको शब्द तथा कामदेव की बोलीको माधुर्य गुण सों समता है यहां डर के जगह उर पाठ होय तो ऐसो अर्थ है कि उज्वलमणिको जो नूपुर सोई जैसे शिवजू भये तेह नूपुरको भीतरको जो घर सोई उर नाम शिवजूको हृदय भयो तामें रवा सब जो सोई भगवान् हैं विविधरूप करि हृदयरूपी घर करि रटि के हैं यह अर्थ में भी बोलो के माधुर्य को समता है पर पाठ अरु अर्थ पहिलो प्रमाण है कटि भगमें रटति जो सुन्दर किंकिणी नाम क्षुद्रघंटिका तामें रव जो शब्द सो अनुपम नाम उपमा रहित बरन्यो न जाय है तथापि कछु कहे हैं क्षुद्रघंटिका को जो आकार सोई हेम जलज

नाम पीतकमल ताको कलनाम मधुरकलिन नाम अनेक कली
ताके मध्यमो जैसे भ्रमर मुखर नाम बर्बर होकरि सोभै अर्थात्
सूर्यकेप्रकाशकरि फूल्यौ जो कमल तामोरस पानकरबेके निमित्त
बैठ्यौ जो भ्रमर राती के प्रवेशमो कमल को संपुट ह्वै गयो सोई
कमलकलीको आकारभयो पहिलेतें भ्रमर बैठो रह्यो संपुटभये
पर वामो रुकिगयो सो जैसे भीतरतें मधुरशब्दकरे तैसे कमलके
कलीको आकार जो क्षुद्रघंटिका तामें जोरको शब्दसोई भ्रमर
को गुञ्जार सदृशभयो यहअर्थहै विशाल जो उरतामो भृगुचरण
सुन्दर सोभत हैं सो अति कोमल ताको सूचित करत हैं अर्थात्
इतना कोमल बच्छस्थलहै कि यामें चरणको चिन्हउखरि रह्योहै
कंकणादि भूषणको विधि जो ब्रह्मामो अपने हाथनतें बनाये मन
लगायकरि ब्रह्माको बनावनो कहनो अति सुन्दरता जनायबे के
अर्थहै गजमुक्ताको जो मालाताके बीचमो सोभत जो पदिकनाम
जवाहिरकी चैाकीताकीनिकाई कह्यो न जातहै जैसे उड़गणजो
तारागण ताकेमंडलमें सबकेऊपर होयताकेमध्यमें जैसे नवोग्रह
ने अथाई नामसभा रचीहैअर्थात् मेघतुल्यशरीर ताकेऊपर मुक्ता
की माला सोई तारागण को मण्डल सदृश ताके मध्यमो जवा-
हिरकी जोचौकी सोईसभा तुल्यभई तामो अनेकरंग के जोमणि
सोई नवोग्रहरूप बैठे हैं इहांभी अभूत उपमा है भुजंग जो सर्प
ताकोभोग जोशरीर तैसाहै भुजदण्ड जाके तामोकमल शंखचक्र
गदावनिआदिनाम सोभतहै कुलिसजो हीरा तथा कुन्दके पुष्पको
कुण्डलजो कली अरुबिजुली की जो द्युति सोसब दांतन को देखि
करि लज्जित होतहै अर्थात् उज्ज्वलताकरि हीरा आकारकरि
कुन्दकीकली चमकतेंबिजुली लज्जितहोतिहै यहभावहै नासादि
कुण्डलपर्यन्त ललितनाम सुन्दरहै भ्रू जो भौंहैं ताकीछवि मोको
भावैहै पर कहिबेकी शक्ति नहीं कुञ्चित नाम टेढ़े कच जो बाल
तथासिरके ऊपरमुकुट सोभतहै अरु ललाटके ऊपरतिलकताको
समझाय कहतहैं अलप नाम थोड़ी जो बिजुली ताको दैारया
चन्द्रमाके मध्यमें चंचलता त्यागकरि रहिगईहै अर्थात् केशरि के
तिलकको जो दण्ड सोई बिजुली की रेखभई अरु ललाट पर्यन्त
जो मुख सोई चन्द्र मण्डलतुल्य तेहके मध्यमो स्थिर भई है निर्मल
पीत जो दुकूलनाम वस्त्र अनूपम उपमारहित यद्यपि उपमा तो

हृदयसो न आवे है तथापि कछु कहत हैं बहुत मणि संयुक्त जो श्याम पर्वत को शृङ्गता के ऊपर सोना के वस्त्रकी रुचिराई नाम सुन्दरता जैसे अर्थात् श्यामपर्वतके शृङ्गतुल्य शरीरअनेक जोभूषण सोईमणिसदृश सोनाके वस्त्रतुल्य पीतांबर यहसदृशहै दहिनेभाग सोलक्ष्मीजू कैसी सोभतिहै कि जैसेतमालके रूपजो भगवान ताकेढिग सोनेकी लता सदृशलक्ष्मीजू नील शोमिचोलनाम वस्त्र उढ़ाये है आगे स्पष्ट है ६२ ॥

मू०। मनहूतनोईयातनकोपरमफल। सबअंगसुभगविंदुमाधवछवि तजिसुभाउअवलोकुएकपल। तरुणअरुणअंभोजचरणमृदुनख दुतिहृदयतिमिरहारी। कुलिस केतु यव जलज रेख वर अंकुश मनगजवसकारी। कनकजटितमणिनूपुरमेखलकटितटरटति मधुरबानी। त्रिवलीउदरगंभीरनाभिशर जहंउपजेविरंचि ज्ञानी। उरवनमालपदिकअतिसोभितविप्रचरणचितकहं करषै।श्यामतामरसदामवरणवपुपीतवसनसोभावरषै। कर कांकणकेयूरमनोहरदेतिमोदमुद्रिक न्यारी। गदाकंजदर चारुचक्रधरनागसुंडसमभुजचारी। कंबुग्रीव छबिसीवचि-बुकद्विजअधरअरुणउन्नतनासा। नवराजीवनयनशशिआनन सुखदविशदहासा। रुचिरकपोलश्रवणकुंडलशिरमुकुटसु-तिलकभालभ्राजै। ललित भ्रकुटिसुन्दरचितवनिकचनिरखि मधुपअवलीलाजै। रूपशील गुणखानिदक्षदिशिसिंधुसुतारत पदसेवा। जाकीकृपाकटाक्षचहतशिवविधिमुनिमनुजदनुज देवा। तुलसिदासभवचासमिटैतबजबमतिएहिसरूप अटकै नाहितेदीनमलीनहीनसुखकोटिजनमभ्रमिभ्रमिभटकै ६३॥

टी०। तजिस्वभावनाम चंचलताछोड़िकरि यहमनकों सिखा-वतहैं कुलिसादि रेखासों वरनाम श्रेष्ठ है अंकुसरूप जो रेखासो भक्तनके मनरूप हाथीको वसकारतहै त्रिवलीनाम तीनपेटीपड़ी है उदरविषें गम्भीर जो नाभी सो भयो सरोवर जेहि विषें ब्रह्मा ऐसोज्ञानी उत्पन्नभयोहै पदिकनाम चौकी तामरस कमलदाम नाम गुच्छा मुद्रिकनाम अंगूठी ॥ ६३ ॥

मू०। बन्दौरघुपतिकरुणानिधान। जातेंछूटैभवभेदज्ञान। रघुवंश कुमुदसुखप्रदनिशेश। सेवितपदपंकज अज महेश। निजभक्त हृदयपाथोजभृङ्ग। लावण्यवपुषअगणित अनङ्ग। अतिप्रबल

मोहतमसमारतण्ड। अज्ञानगहनपावक प्रचण्ड। अभिमान सिन्धुकुम्भजउदार। सुररञ्जनभञ्जनभूमिभार। रागादि सर्पगणपन्नगारि। कन्दर्पनागम्रगपतिमुरारि। भवजलधिपोत चरणारविन्द। जानकीरमणआनन्दकन्द। हनुमन्तप्रेमबापी मराल। निष्कामकामधुकगोदयाल। त्रैलोक्य तिलक गुण गहनराल। कहतुलसिदासविश्रामधाम॥ ६४॥

टी०। भवभेदज्ञान नाम संसार रूपजो भेद बुद्धि अर्थात् परमेश्वरआन जीवआनतथा जीवविषैंभी नानाबुद्धिसों भेदज्ञानछूटैहै जेहरघुबरतें तेहको हमबन्दनकरैं हैं रघुबंशीकुल कोईरूप ताके सुखदेबेको निशेशनाम चन्द्रमा. अपनेभक्तन्ह के हृदयरूप कमलमों भ्रमरसदृश मोहरूपी अन्धकारको मार्तण्ड नामसूर्य रूप अज्ञान जो गहननाम बन ताके जलाइबेको प्रचण्ड पावक नाम डाढ़ा के अग्नि तुल्यरंजननाम सुखकारी रागादि जो विषयादिविषै अनुराग सोई सर्पसमूह ताको पन्नगारि नाम गरुड़रूप कन्दर्प जो कामदेव सोई नाग नामहस्ती ताको सिंहसमान जो मुरारि पोतनामजहाज बापीनाम बावली जलस्थल निष्काम जो भक्त ताकों कामधुक गोनाम कामधेनु वाहूतेंयतनों विशेषहै कि कामधेनुसब कों सबदेतिहै भगवानरूपी कामधेनु भक्तनके अति दयालु अर्थात् कामधेनु तें जीव जो निषिद्धउ फलकों इच्छाकरै सोऊदेतिहै सो भगवानरूप कामधेनु भक्तन्हकों निषेध फल मांगते भी नहीं देते यह हेतुते दयालकहे तीनोंलोकके तिलक नामभूषण गुणनकरि गहननाम गम्भीर अन्यत स्पष्टहै॥ ६४॥

सू०। रामरामरमु रामरामरटु रामरामजपुजीहा। राम नाम नवनेहमेहको मनहठि होहि पपीहा। सब साधनफल कूप सरितसरसागरसलिलनिरासा। रामनामरविस्वातिसुधा शुभसीकरप्रेम पियासा। गरजि तरजिपाषाण बरषि पवि प्रीतिपरखिजियजानै अधिकअधिकअनुरागउमग उर पर परमितिपहिचानै। रामनामगतिरामनाममति रामनाम अनुरागो। ह्वैगयेहैंजेहोहिंगे आगेतेइगनियत त्रिभुवन बड़भागी। एकअङ्गमगअगमगवनकरिविलँबुनछिनछिन काहैं। तुलसीहितअपनो अपनोदिशिनिरुपधिनमनिबाहैं॥ ६५॥

टी०। रामराम जो शब्द ताहिमें रमणकरु अर्थात् मनलगाव

राम २ रटु अर्थात् उच्चस्वरतेंकछु राम२ जिह्वातें जपु याकोयह भावभयोकि जौमन विषैकों स्मरण करैहै सो रामनामके प्रभाव सो लगे उच्चस्वरकरि अन्य जोविषै सम्बन्धीव्यर्थ वार्ताकरैहैताको त्याग करि राम सम्बन्धी वार्ता बोलि वचन सफल करनो अनेक कामनाकरि जो अनेकमंत्र सावरादि जपैहै ताकों त्यागिकरिसव सिद्धिके अर्थ रामनाम जो मंत्रराज ताहीको जपनो यह भाव है रामनाम विषैं नवीन जो नेह सोई स्वाती नक्षत्रको मेघ ताको रेमन हठात्कारतें पपीहाहोहि अर्थात् पपीहाके वृत्तिकों ग्रहण करुतेह वृत्तिकों अगिलेतुकतें जनावतहैं रामनामको त्यागिकरि अन्य जो योगादि साधनाको फलसोई कुआं नदी सरोवर समुद्र को जलभयो अन्यजल तें पपीहा निरासा नाम निष्काम है तैसे कूपादितुल्य जोसबसाधन जलसदृश जोफल तेहतेंतुहूं निरासहो-सब जलते निरासा होकरि पपीहाकी लगनि कहाहै सो देखा-वतहैं रामनाम विषैं जोरति सोई स्वातीको सुधानाम जलमंगल रूपताकी सीकरनाम कना ताहीकोहै पियास जेहपपीहा को अर्थात् पूर्णसमुद्रादिके जलकों त्यागकरि एकबूंद विषै लगनि है तैसेंसमस्त स्वर्गादिको लोभत्याग करि रामनाममेंनिष्ठाकरु यह भावहै अब पपीहा प्रति मेघ की करनी देखावत हैं गरजि करि तरजिनाम डाटैहै जो हमतें तू मति प्रीति करै डाटतें जब नहीं विमुखभयो तब पाषाण यथा पविनाम वज्रवरसिप्रीतिकी परीक्षा करि मेघ अपने मनमें जानत भयोकि हम ऐसी करनी किये ता-हूपर पपीहा अधिक अधिक अनुराग करि उमगतहै हृदयविषै ऐसीदशा पपीहा की विचारि परमरमित नाम प्रेमकेपराकाष्ठा की सीवं पपीहा विषैं मेघ पहिचानत भयो तैसी उपासक की वृत्ति चहिये अर्थात् डाटबेतुल्य दूहां शरीर सम्बन्धीदुख रोगादि करि जो पीड़ा पाषाण के वृष्टितुल्य स्त्री पुत्र धनादिके नाश करि मानसिकक्लेश ऐसक अवस्थामों प्राप्त होकरि स्वामी विषैंप्रीति की वृद्धिहोय सो उपासना की निष्ठा कहै अब तेह उपासककी आचरण जनावत हैं रामनाम है गतिजाको अर्थात् केवल राम नाम तें मेरो कल्याण होयगो यह विश्वास तें अन्य साधन को अभाव तथा राम नाम को मति है अर्थात् अनेक साधन ताको अनेक फल तेह सबतें विमुख होकरि केवल राम नाम विषैं बुद्धि

की स्थिति है तथा राम नाम विषें अनुराग जाको अर्थात् देह गेह स्त्री पुत्रादि जो प्रेमके स्थान तेह सबकों भूलि राम नाम विषें एकाकार वृत्तिभई है ऐसेजो उपासक भूतकाल में ह्वैगये बर्तमान में हैं भविष्य में जो होंयगे सोई तीनों भुवन में बड़भागी गिने-जातहैं अर्थात् वेदशास्त्र सज्जन तिनहींकी महिमाको कहेहैं विषई जीव दुर्बुद्धि अन्य ऐश्वर्यमान गुणमान को प्रशंसाकरत हैं पर तेह जीवन्ह को बचन सज्जन को प्रमाण नहीं यह भाव है यह पपीहा की वृत्ति एकांगी सो मार्ग अति कठिन है तामें गमन करिके क्षण में छांहके अवलम्बकरि विलम्बमति कर अर्थात् रास्तामें जबचले तौ क्षण २ में छायापकड़े तें रास्ता नहीं कटत है तैसे नानालोक परलोक संबन्धी साधन तथा ताको फल जो सुख सोई छाया सदृश है तेह छाया पकरे तें बीचही अटके गो यह भावहै चेतकहो कि विषै सब त्यागकरि प्रीतिकरनो सो स्वामी उलटोनाना दुख देत हैं तेहपर कहतहैं तुलसीदासकि अपने ओर तें निरवधि नाम कामना रूप जो कपटतेहते रहित जो नेमताके निबाहेतें अवश्यअपनोहित होतहै अर्थात् स्वामीके कर्त्तव्यताविषैं दृष्टिन करनो अपने जोसेवक को धर्मतामें सुमेरुवत् अचलरहनो पपीहाकीनाईं यहअर्थहै ६५॥

मू०। रामजपुरामजपुरामजपुबावरे। घोरभवनीर निधिनामनिज नावरे। एकहीसाधनसब रिद्धिसिद्धिसाधिरे। ग्रसेकलिरोग योगसंयमसमाधिरे। भलोजोहै पोचजोहैदाहिनोजोबामरे। रामनामहींसोंअन्तसबहीकोकामरे। जगनभबाटिकारहीहै फैलिफूलिरे। धूमाकैसेधौरहर देखितूनभूलिरे। रामनाम छांड़िजोभरोसोकरे औररे। तुलसीपरोसो त्यागिमांगैकूर कौररे॥ ६६॥

टी०। अपने मनतें कहतहैंकि रामजूको जपुबारबार जो कहे सो निश्चयके अर्थभगवन्नाम त्यागकरि अन्यसाधनतथा विषयादिके ओर मनजात है तेहहेतुते बावरे संबोधनदिये कैसो है रामनाम भयानक जो संसार समुद्र ताको निजनाव है अर्थात् अपनी नाव अपने आधीन नरहतहै जबचाहै तबनदीकोपारभये तैसे बिलंबरहितराम नाम संसारको पार करत है यहभाव एक नामहीं करि सब रिद्धि सिद्धिनको साधनकरु चेतकऊकि अन्यकोक्यों छोड़ावत हो तेह पर कहेहैं कि कलिरोग नाम चित्तशुद्ध नहीं तथा रोगादिकरि शरीर

व्यग्र आयुर्बलधारी यहजो कलिरोग तानेयोगादि साधन को ग्रास करिलियो अर्थात् अन्यसाधन सिद्धिनहीं होते और युगनमें और साधनकरि जीवकृतार्थ होतरहे पर कलिकाल विषे तो भलो जो वर्णाश्रमवान जीवपोचजो नीचजीव दाहिनेनाम सन्मुखवाम नाम बिमुखजीव यह सबको अन्त जो मरण अवस्थामें राम नाम नहीं सो कामना में अपनो प्रयोजन होतहै ऐसन अर्थात् यावत् शरीर प्रबल रहतहै तावत् अनेकसाधन अनेक उपाय करत है जब मरण को समय आवतहै तबजो कोउ वाके निकट रहतहै सो यही उपदेश करतहैकि रामनाम कहो वा समयमें कोउ ज्ञान योग भक्ति आदि अरुअन्य देवादिको उपदेश नहीं करत तथा मरणभये पीछे जबतक शरीरको लैचलतहैं तबहूं रामनाम सत्य है यही कहत हैं यह लोकमें प्रसिद्ध है यह हेतु तें कहेकि अंतकाल में केवल राम नामतें अपनोकामहै अबही पुत्रादि विषै जो ममता ताको छुड़ावतहैं कि जगत नाम जो हम हमार सो आकाश की बाटिका सदृश फैलिफूलिरही हैं यहां फूल सदृश जगत संबन्धी विषय वासना फलतुल्य विषयप्राप्तभये जो सुखताको धुआं को अटारी जानि देखिकरि तूमतिभूल अर्थात् ममत्वकोमूल देहसोई मिथ्या तो देह के संबन्धी जो पुत्रधनादि तेहकी कौन गिनती यह पूर्वोक्त हेतुन्ह को विचारिकरि रामनाम को अवलंब करनो यह सिद्धान्त है जो कोउ राम नाम त्यागकरि अन्य साधन को अपने कल्याण के अर्थ भरोसो करतहै ताको तुलसी कहतहै कि आगेको परोसो त्यागि करि सो कूरकौरा मांगो है अर्थात् कूकर के जातिमें गिन्यो जाय है यह अर्थ है ॥ ६६ ॥

मू०। रामनामजपु जियसदासानुरागरे। कलिनविरागयोगयागतपत्यागरे। रामनामसुमिरणभव बिधिहीकोराजरे। रामकोबिसारिबोनिषेध सिरताजरे। रामनाम महामणिफणिजगजालरे। मणिलियेफणिजियेव्याकुलबिहालरे। रामनामकामतरुदेतफलचारिरे। कहतपुराणवेद पण्डितपुरारिरे। रामनामप्रेमपरमारथ कोसाररे। रामनामतुलसीको जीवन अधाररे॥ ६७॥

टी०। पूर्वके पदके अर्थ को पुष्टकरत हैं सानुराग नाम अनुराग सहितनिषेध बिधिदोपदार्थ हैं सो राम नाम को स्मरण करनो सब

बिधिन को राजा है तथा बिस्मरण करनोसग निषेधन्ह को सिरताज
नाम सिरको भूषण अर्थात् श्रेष्ठ है जगजाल जोजगसमूह सोई फणि
नाम सर्पभयो रामनाम महामणि तुल्यतेहमणिके लैलियेतें फणि
जो सर्प सोजिये नाम क्या जीवे है किन्तुनहीं इहांकाकुहै चेत जीवे
भीतो व्याकुल बिहाल होकरिरहतहै अर्थात् सामर्थहीन याको यह
भावभयो कि मस्तककी जोमणिताके लैलियेतें सर्पनहीं जीवत जो
किंचित् कालजीवेतौ पौरुषहीनरहत है ताको साद्दश्य ऐसो है कि
भगवतभक्तन विषैंदो मार्ग हैं एक प्रवृत्ति द्वितीयनिवृत्तिसो महावी-
रादि निवृत्ति मार्गनिष्ठ हैं तिनको जगत रूपसर्प के मस्तकमणि तुल्य
श्रीरामनाम लैलिये ते संसाररूपी सर्प हतकाह्वैगयो अर्थात् समूल
संसार नष्ट भयोअरु जनकादिक महात्मा. प्रवृत्ति मार्ग के आचार्य्य
उनकों वामणिके लैलियेतें वह सर्पजीवै परि व्याकुल होकरि अर्थात्
व्यवहार उनकोंबंधननहीं करिसकत यहभाव है रामनामकों कल्प-
वृक्ष सदृश कहेपर फलके देबेकों अधिक देखावत हैं अर्थात् कल्पवृक्ष
त्रिवर्गदेत है मोक्षनहीं देसकत औ रामनामरूप कल्पवृक्ष सामी-
प्यादिपंच प्रकारकी मुक्तिदेतहै यह आधिक्यहै यावचनकों अगिले
तुकतें साक्षीदे करिपुष्ट किये रामनाम विषैं अनुराग समस्त परमा-
रथके साधनकों सार भूतहै चेतऐसो कहो कि अनेकशास्त्र अनेक
आचार्यहैं सबको तो यह सिद्वांत नहींदेखि परत तेहपर कहत हैं
कि जेहकों रामनाम मों निष्ठा नहीं तेहकों मति होउ पर तुलसी
ऐसेजीवन्हकोंतो यहलोकबिषैं जीवन रूपतथा परलोकविषैं आधार
नाम समस्त कल्याणको अवलम्ब यहीदो अक्षरहैं अर्थात् यहलोक
बिषैंहम ऐसे जीव जो कपूत उद्यम हीनखेती चाकरी व्यापारादि
कछु करते नहीं केवल श्रीराम नाम के अवलंब करि सदा घीव
चीनी मिलत है यह हेतुतें जीवन भयो तथा परलोक विषैं कल्याण
करबेकों अवलंबहै तामोंवेद शास्त्र पुराणतथा महात्मनकों वचनअरु
हृदय प्रमाणहै यहां वेदादि कहतहैं यह पद दियेतेहतें प्रमाणको
अपेक्षाभयो सो प्रमाणके वचन श्रुतिस्मृति नहीं लिखिबेमों यह हेतु
है कि महात्मा जौ गोसाइँ सूर आदि कलिकालके जीवन्ह परकृपा
करिवेद शास्त्रको रहस्यभाषा प्रबंध अति सुलभ करि जनाये ताकों
अपने मन्दबुद्धितें वचनिका टीका लिखबेको आरंभ कियेतो भाषा
ग्रंथकोअर्थ वचनिका टीकामो संस्कृति श्रुति स्मृति लिखनी अपने

कों अति असंगत बूझिपरत है यहहेतुतें प्रमाणकछों नहींलिखे न लिखेंगे पर जाको प्रमाण देखवे की इच्छाहोय सो सतसंग विलास श्रीरामायणके सिद्धांतको संदर्भ है वाकोंदेखिलेनोइहांऐसो विचार है कि गोसाईंजूर यह सब लोमहात्मासो बेदशास्त्रपुराणको हृदय भाषाकरि प्रतिपादन किये सो यहमहान भक्तन्ह की वाणीभगवत् रसिकन्हके विचारेतें वेदतुल्यहै प्रमाणकी अपेक्षा नहीं राखत औ जोविमुख जीवहैं सोवेदकोभी प्रमाण नहींमानते भाषाकोपूछे यह विनयपत्रिका ग्रंथ समस्त सिद्धांतको आकरहैं याकेऊपर प्रमाणजो कोऊदेखवे की इच्छाकरे तो समस्तवेदशास्त्र पुराणयह प्रमाणमो पर्यवसान होंयगे तथापि विशेष वाक्यन्हको संग्रह श्री मद्भगवत तत्व भास्करहै विनय पत्रिका विषैंजवने पदके सिद्धान्तको प्रमाण देखवे कों चाहै सो वामेंदेखिले यह विचारके ग्रंथके समाप्तिमें लिखते सो इहांराम नामको सिद्धान्तनिरूपण भयेतेंह विषैगोसाईं यह वचन लिखे कि श्री रामनाम के प्रभाव कों वेदपुराण पण्डित तथा शिवजकहत हैं यह प्रसंग करिजो विचार अन्तमें लिखनेरह्यौ सो यहांईं लिखे॥ ६७॥

मू०। रामरामरामजीहजौलैंतूनजपिहै। तौलौंतूकहूंजायतिहूंतापतपिहै। सुरसरितीर बिनुनीरदुखपाइहै। सुरतरु तरेतोहिं दुखदारिदसताइहै। जागतवागतसुखसपनेनसोईहैजनमजनम युगयुगजगरोइहै। छूटिबेकी यतनविशेष वांध्यौजायगो। ह्वैहै विषभोजनजोसुधासानिखायगो। तुलसीबिलोकतिहूंकालतोसेदीनको। रामनामहीकीगतिजैसेजलमीनको॥ ६८॥

टी०। अब राम नाम त्याग करि जाको अन्य साधनान्तर ते अपने कल्याणकी प्रतीतिहै ताको निषेध करतहैं कहूंजाय नाम स्वर्गऊमें जायपर दुःख नहीं छूटत अर्थात् स्वर्ग अधिकारी जो इन्द्रादि देवता तान्ह को रावणादि करि नाना दुःख पौराणादि करि प्रसिद्ध हैं गंगाजीके तटमो जल व्यतिरेक दुःख पायवे का यह अभिप्राय है कि यह कालविषै ऐसे मनुष्यन्ह को देखे हैं कि गंगाजीके तट विद्यमान हैं पियास लग्यौ है जलनहीं पीवते काहूने कहिदियो हैं कि नदीकेजलकरि रोगादिविकार होतहै यहहेतु गंगाजीको जलत्याग करिकूपजल ढूंढ़ते हैं अर्थात् गंगाजीकेस्वरूप ज्ञानव्यतिरेक किनारे पररहिकरिभी नहींपीवे हैं तथा कल्पवृक्षके निकट गयेहू स्वरूप

जाने व्यतिरेक दरिद्रता बन्योरहत है बागतनाम चलतेअमृतको सन्योभोजन तुल्यजो ज्ञानादिसाधन सो विषतुल्य नाम तेहकरि भरणहोतहै अर्थात् जन्ममरण छूटबेके अर्थज्ञानादिशास्त्र प्रतिपादनकरेहैं सोकालके प्राबल्यकरि जीविकाकेअर्थसंसाररूप होयहै इतने तुकन्हिकरि यहजनाये कि रामनामावलम्ब व्यतिरेक जेतने सुखदाईसाधनसोदुखदाई होतहैंताको यह अभिप्रायहैकि कलिकालमे नामावलम्ब व्यतिरेक दूसरो साधन को अभाव महात्मा व्यासादिके सम्मतकरि निश्चयकियोहैतेहनामकोत्यागकरि अन्य साधनकरि सिद्धियह कालमेनहीं होत यहभावहै अनेकसाधन सम्पत्तिकरि समर्थहैं सो यह सिद्धान्तको न स्वीकारकरैंतो मति करो पर हेतुलसी तोसे दीनजीवन्हिकोतो श्रीरामनाम त्यागकरि दूसरीगति तीनोंलोक तीनोंकालमे नहींहै जैसेमछलीकोजल६८॥

मू०। सुमिरसनेहसोंतू नामरामरायको। सम्बरनिसम्बरकोसखा
असहायको। भागहैअभागहूकोगुणगुणहीनको। गाहक
गरीबकोदयालदानिदीनको। कुलअकुलीनकोसुन्योहैवेद
साखिहै। पांगुरकोहाथपांयआंधरेकोआंखिहै। माय बाप
भूखेकोअधारनिराधारको। सेतुभवसागरकोहेतुसुखसारको।
पतितपावनरामनामसोंनदूसरो। सुमिरिसुभूमिभयो तुल-
सीसोऊसरो॥ ६९॥

टी०। कैसोहै नाम कलेवाहीनको कलेवाहैअर्थात्यहलोकमे प्रसिद्धहै कि हजारोंबैरागी हजारोंकोसफिरत रहतहैं परकोऊ खरच बांधि करि नहीं जात केवल श्रीराम नामके शरण करि भोजनकी चिन्ताकरनो नहींपड़ै सुखपूर्वकमिलतहै तथापरमार्थ सम्बन्धकरिजेहजीवन्हिकोबैकुण्ठादिगमनहै ताहूकोयहीकलेवाहै अर्थात् सुखपूर्वक पहुंचावने वालो है तथा असहाय को सखा है अर्थात् पुत्रादि जो सेवा करनेवाले ताको त्याग करि भगवन्नाम के अवलम्बकरि जो बैठेहैं ताको सैकड़ों जीव शिष्य होकरि सेवा रूपसहाय करतहैं यह अर्थहैअभागेको भागहै अर्थात् जीविका के अर्थ नानाव्यापार करतहैं तथापि अपनें स्त्रीपुत्रादिको पालन नहीं ह्वैसकत औजोजीव श्रीरामनामके अवलम्बतें सर्वउपायको त्यागकरि निरुद्यमविचरतहैंसोसैकड़ों जीवन्हिकोपालनकरत हैं अरुसमस्त जगतगुरुको नाईं पूजनकरतहै यहप्रत्यक्षऐसऊमलीन

कालमो देखिपड़त है तथा गुणहीन के गुण है अर्थात् गुणकरि आदर होतहै सो नामावलम्बीको आदर परमेश्वर करतहैं अन्य जीवन्हकी कवनगिनती गरीबको गाहक अर्थात् जेहतेंकोऊपरिश्रम अपनो कल्याणके अर्थ न ह्वैसकै तेहजीवको रामनाम ग्रहण करतहै तथा जीवन्हकों दयालुदानी अर्थात् और साधनपरिश्रम तें सिद्धहोतहै यहपरिश्रमहीन कृतार्थ करत है अकुलीन कोकुल है यह बार्त्ता सुन्यौ है महात्मन्ह के सुखकरि अरु वेद साखी है अर्थात्युधिष्ठिरकेयज्ञविषैं त्रैलोक्यके महात्माएकत्रभये रहेसाक्षात् भगवानऊ आपरहे पर यावत् स्वपच नहींआये तावत् पञ्चजन्य शङ्ख नहीबज्यौ तथा दण्डकारण्यमो अनेक ब्रह्मर्षिविद्यमान रहे पर श्रीरघुबर सेवरीके आश्रम पर गये तथा पंगुको हाथ पांव हैं अर्थात्पांवकरि चलनो होतहै सोनामावलम्बकरि ब्रह्मलोक पर्यंत जाइबेकी गतिहोतिहै कोसदोकोसकी कवन कहै तथा हाथकरि ग्रहण होतहै सो नामावलम्बतें अति सामान्यजीव सोऊभगवत ऐश्वर्य को ग्रहण करत है आंधरेको आंखिहै अर्थात् आंखिमें बड़ो तेजज्योति होय तौ बिगहादोबिगहाकी वस्तु सूझैहै नामावलम्बी कोंतो जगतको परमेश्वरका सम्यक्स्वरूपसूझतहै भूखेको मायबाप अर्थात् हेतुरहित कपूतऊको अवश्य पालनकरने वालो है निराधारको आधार अर्थात् सर्वसाधन हीनको मरण पर्यंत जो स्मरण होय तो परलोकके कल्याणको आधारहोत है यामो अज़ामिल की कथा प्रसिद्ध है संसार समुद्रको बांधहै अर्थात् बांधके ऊपर लंगड़ालुञ्जा सब निबहतहै तैसे सबजीवन्हिको नाम पारकरतहै सुखको सार जो पञ्चप्रकारकी मुक्तिसामीप्यादि ताके हेतु नाम कारणहै निश्चय सिद्धान्त करि कहतहैं कि अन्यसाधन ज्ञानादि पावन जीवको पावन करतहै पर पतित जीवन के पावन करिबे को नाम त्याग करि दूसरो नहीं तामो प्रत्यक्ष प्रमाण देखावत हैं कि ऊसर पृथ्वी तुल्य जो तुलसी सोऊ सुन्दर भूमि होतभयो कि जामो रेंगनी न लगै तामो केसरि लगतिभई अर्थात् सबगुण हीन जो तुलसी तेह विषैं ज्ञान भक्ति वैराग्यादि महान गुणकों उदय होतभयो यह भाव है ॥ ६९ ॥

मू० । भलीभलीभांतिहैजोमेरेकहेलागिहैमनरामनामसों सुभाव
अनुरागिहै । रामनामको प्रभावजानजुड़ीआगिहै । सहित

सहायकलिकालभीरुभागिहै। रामरामनामसोंबिरागयोग जागिहै। बामबिधिभालहुनकर्मदाग दागिहै। रामनाम मोदकसनेहसुधापागिहै।पाइपरितोषतूनद्वारद्वारबागिहै। कामतरुरामनाम जोइजोइमांगिहै। तुलसीदासखारथपर-मारथनखांगिहै॥ १०॥

टी०। रेमन जैासेरेकहेसो लागिहै नाम लगेगो तैाभलीभांति भलोहोयगो अपने कहनेको जनावतहैं किरामनामसोंखभाव पूर्वक अनुरागकार रामनामके प्रभावकों जुड़ीआगि जानु अर्थात् देखबे मों कथन मों कोऊ प्रकार को ताप नहीं देखि परंत पर निषाधरूपजो कलिकालसो अपने सहायसहित डरिकरि भागतहै अर्थात् जो रामनाम के आश्रयी जीवको ग्रहण करैतो जरिजाय जैसे पाला सबको शीतल प्रतीति होतहै परन्तु वृक्षादिकों जला-वतहै तैसे नामसबकों शीतलहै कलिकालमात्रको अग्निरूपह्वैकरि जलावे है यहा जूड़ी नाम शीतकरि जो कम्प ताकों जैसें आगि दूरकरतिहै तैसें जूड़ोसदृश कलिकालताको रामनामरूपी आगि नाशकरतहै यह भावहै जो रामनामतें अनुरागहोय तो संसारतें जो बैराग्यतथा योगादि जोसाधनसो आप जागिहै नाम प्रकाश होयगो टेढ़ाजो ब्रह्मासो ललाटके कर्मरूप दागतेंन दागेंगे अर्थात् जेह जीवके भाग्यमो सुखनहीं पूर्वजन्मविषैं कोई शुभकर्म नकियो है ताकों ब्रह्मा टेढ़े हैं पर रामनामके अवलम्बको जोकरै तो टेढ़ जो ब्रह्मा सो दुखरूप जो कर्म को दाग तेहतें नहिं दागि सकते अर्थात् यद्यपि नरकादि योग्य जन्मांतरीय कर्म हैं तथापि राम नामके शरणकरि नरकादि कोललाटमों सहीं लिखते रामनाम रूपी मोदक नामलाडू स्नेहरूपी अमृततें पग्यो जो तोकों मिलैं अर्थात् प्रीतितें उच्चारणकरै तो तेहलाडूकरि जो परितोषनाम संतुष्टताको खायकरिफेरतू दरवाजे२परनवागिहै नाम न फिरैगो अर्थात् राम नामके अवलम्ब भये भगवत रूपके प्राप्तिकरि परम संतुष्टकी प्राप्तिहोतिहै तेहहेतुकरि द्वारद्वार तुल्यजो नाना सा-धन अनेक उपासना ताकी बासना निवृत्ति होति है लोक पर-लोक के सुखदेवे कों तो कल्पवृक्ष रूप राम नाम तेहतें जोजो तू याचेगोसो तुलसीदास कहतहैंकी खारथजो अर्थ धर्मकाम चैार परमारथजो मोक्षसो न खांगिहै नाम न घटैगो॥ १०॥

मू०। ऐसेऊसाहबकीसेवासोंहोतचोररे। आपनीनबूझनकहैको राडरोरंरे। सुनिमनअगमसुगममायाबापसों। कृपासिंधु सहजसनेहीआपसों। लोकवेदबिदितबड़ोरघुनाथ सों सब दिनसबदेशसबहीकेसाथसों। स्वामीसर्वज्ञसोचलैनचोरचार की। प्रीतिपहिचानयहरीतिदरबारकी। कायनकलेशलेश लेतमानिमनकी। सुमिरेसकुचितचितजोगवतजनकी। रीझें बसहोतखीझेदेतनिजधामरे। फलतसकलफलकामतरुनाम रे। बेंचे खोटोदामनमिलौन राखैकामरे। सोऊ तुलसी निवाज्योऐसोराजारामरे॥ ७१॥

टी०। ऐसऊखाविन्दके सेवासों रेमनतूचोरहोतहै नामबिलग होतहै अपनीतै। ताकों बूझनहीं नकहैको नाम ओर के कहेके मानेनहीं अर्थात जाको अपनो हितआप बूझिवेकी बुद्धिनहीं सो ओर के कहेतें अपने हितको आचरणकरतहै सोतू ओरकेकहे को भी नमानतहै तो तूराड़है नामनीचहै तथा रोरहै नामक्रूर स्वभावहै यहराड़ रोरदोऊलोकोक्ति है कैसो खाविन्दसो जनावत हैं सुनिन्हके मनकोंअगम अर्थात् मनमो जोनआवैसो केवलप्रीति किये पितामातातुल्य सुगम होतहै अर्थात अयोध्यावासी ब्रजवा- सिन्हकों अति सुलभकरि प्राप्तभये प्राप्तहोबेमों हेतुकहतहैं कृपा के समुद्रस्वभावकरिजीवके सखासनेहिनांमस्नेहकरनेवाले आपसों नाम अपने ओरतें अर्थात् केहूकाल मों जीवकों परमेश्वर भूलते नहीं गर्भऐसो निषेध स्थानतहऊं पालनकरतहै यह हेतुतेसहज सखा कहेपूर्वोक्तको पुष्टकरत हैं लोकवेदमो बिदितहै कि रामजू तें बड़ोदूसरो नहीं सो सर्बदिन नाम भूतभविष्य वर्तमान सबदेश नाम स्वर्गनरकादि कालनाम निमेषादि वर्षपर्यन्त सबहीके नाम कीटते ब्रह्मापर्यन्त परमेश्वर अपने ईश्वरता तथाकृपालुताकरि साथसो नामसङ्गनहीं छोड़तहैं सर्वज्ञ स्वामीसों चोरी नहीं चले है चारकीनामदूतकी अर्थात् सामान्यजो बुद्धिमान राजाहोतहै तेहते दूतादि जो राज्यके अधिकारी ताको कपट नहीं छिपेहै और यह परमेश्वररूप स्वामीसर्बकालमो बाह्यअन्तष्करणकेद्रष्टा तेहप्रभुते रिन्दगी कैसेछिपेगीयह विचार निःछलहोकरि स्वामी को सेवन करु चेत पूछो कि कौन सेवाकरों तेहको कहतहैं केवल प्रीति की पहिचान करनो यह दरबार की रीतिहै ऐसो सन्देह

मतिकरूकि चाकरी करनेमें बड़ोक्लेश होतहै ऐसो श्रीरघुवर के चाकरीविषै शरीरके क्लेशको लोगजनहीं केवल मनकी मानिलेत हैं अर्थात् निष्कपट हो करि प्रीति पर्वक सन्मुख होनो यतनोय चाकरीहै चेतयहपूछे कि चाकरी कहा मिलैगी तेहको मनावत हैं किस्वार्थकियेते संकोच युक्तहोकरि जनके रुचिको जोगवत हैं अर्थात् केवल स्वार्थमात्र चाकरीतें जो २ रुचि अर्थधर्म काममोक्ष पर्यन्तसोदेतहैं इतनोंदैकरि भो संकोचकरतहैं कि याके चाकरी के सदृशहमन दिये अवश्यति पूर्वतास्वामीको देखावतहैं किजेह दासकेऊपर रीझेताके वशहोतहैं अर्थात् महावीरके ऊपररीझे ताके आधोनभये और कहेकि हमतुमते उऋण नहीं अर्जुनादि के दासवत व्यवहार किये ऐसे अनेक प्रसङ्गहैं तथा जेह जीव के ऊपर खीझेताको निजधाम नाममोक्ष देत हैं अर्थात् रावणादि को क्रोधकरि मारेपै मोक्षदिये जेह मोक्षको अनेक साधन करि मुनिसब वांछाकरत हैं ऐसो दुर्लभ पदार्थ जाके क्रोधको फल है ताके रीझके फलकोकोकहिसके तयानाम जाकोकल्पवृक्षरूपसब फलको फलैहै यहां सकलपद मोक्षको सूचितकरै है अर्थात्कल्प वृक्षमोक्षनहीं देसकत नामरूपो कल्पवृक्षमोक्षऊदेतहैयह विशेष है अवनामके कृतार्थकरिबेमें प्रत्यक्षप्रमाण देतहैंवेते खोटोदाम नमिलै अरुराखे कछू कामकोसिद्धिनहीं अर्थात् निरुद्यममनुष्यको कोउनहीं पूछैतो ऐसो तुलसी ताको नेवाज्योनाम अपनोकियो ऐसे रामजू राजाहैं रे नोच सम्बोधन है रेमन यहारे जीव ऐसे स्वामीते विमुख होनो उचितनहीं है यह भावहै ७१ ॥

मू०। मेरोभलोकियोरामआपनोभलाई। होतोसाईंद्रोहीपैसेवकहितसांई। रामसोंबड़ोहै कौनमोसोंकौनछोटो। रामसोंखरोहैकौनमोसोंकौनखोटो। लोककहैरामको गुलामहोंकहावों। एतोबड़ो अपराधभवनमनभावों। पाथमायेचढ़ेतृणतुलसीजोनीचे। बोरतनवारिताहियेनिश्रापुसोंचे। ७२॥

टी०। ऊपरनेवाज्यो कह्योताको पुष्टकरतहैं मेरोभलो रामजो कियोसो आपनेभलाईकरिहैं तो स्वामीद्रोहीअरुस्वामीकोस्वभाव सर्वकालसेवककोहितैहै अर्थात् ऐसे स्वामोते विमुख होनो यही द्रोह है तथा विमुख को प्रेरणाकरि अपने सन्मुख करनो यही स्वामीको हितकरनोहै खरोनाम दोषरहित समस्तविश्वमे को

रामको गुलाम कहतहैं सो जबमैं कहावतहूं तबकहतहैं इतने बड़े अपराधतेंभी स्वामीको मनहमतें बावौंनाम टेढ़ोनभयो अर्थात् जेहिके दासानुदासके दास कहायबेको अधिकारनहीं सो साक्षात् स्वामी को दासकहावै यह बड़ो अपराध है पै अपनी कृपालुताकरि स्वामी अपराध को भुक्तिकल्याण करतभयेसो कहतहैंकि सामान्यजो कोऊ बड़े २ हैं सोऊ अपने आश्रितकेअपराधको क्षमाकरतहैं तो श्रीरघुबर ऐसे स्वामी मों यह आश्चर्य नहींहै पायजो जलताके माथेपर तृणचढ़तहै जो तृण अतिनीचो है अर्थात् जलतें तृणउत्पन्नहोतहैतो जेहिते अपनी उत्पत्तितेहिके माथे पर चढ़नो यह बड़ो अपराधहै तथापि बारि जोजलसो तेहतृण को बोरत नाम डुबावत नहीं अपनो जानिकरि अधिक सींचैहै तो जड़न्हको यह गुणहै त्रैलोक्यनाथ जो श्रीरघुबर तेहके गुणको को कहिसकै ॥ ७२ ॥

मू०। जागुजागुजीवजड़ जोहैजगयामिनी। देहगेहनेहजानिजैसे घनदामिनी। सोवतसपनेसहै संसृतिसन्तापरे। बूड़्यौमृग बारिखायोजेवरिकोसांपरेकहैंवेदबुधतूतोबूझमनमांहिरे। दोषदुखसपनेकेजागेहीपै जाहिरे। तुलसीजागेते जायतापतिहूंतापरे। रामनामशुचिरुचिसहजसुभायरे॥ ७३ ॥

टी०। रेजीव जड़ जागु २ इहां जीवको जड़ कहे सो अपनो कल्याण नहीं देखतहै तेही हेततें जागु जागु दोबार निश्चयकर अर्थ कहे जागिकरि कहाकरनो सो कहतहैं जो हेनामदेखजगत रूपरात्रिको अर्थात् जगत अंधेरीरात्रिसदृशहै वामे जोगाफिल भयौ तो कामक्रोधादि जोबटपार सोमारिलेंगे बचेगोनहीं ऐसो विचारकरि जागु अर्थात् जगतको पीठदैकरि भगवानके सन्मुख होउ यह भावहै जागबेको स्वरूपदेखावतहैं देहगेहको जो नेहताको मेघविषैं जैसे बिजुली तैसे जान अर्थात् देहादि के नश्वरताको जब निश्चयहोय तब जानियेकि जग्यौ पूर्व जगेके लक्षण को कहिकरि अबसो एकस्वरूपको देखावतहैं जोसोयोहै सोसंसृति नाम संसार के सन्तापको सहत है कवन सन्ताप सो कहत हैं मृगतृष्णाके जलमो बूड़िमस्यो जेवरिके सांपने खाइलियोअर्थात् अविद्या रूप निद्रा मो जो पस्यौ सो झूठ जो मृग तृष्णा के जल सदृश संसार प्रवाह तामो डूबत है इहां जन्म मरण करि नाना

योनिविषे भ्रमभय अर्थात् आत्मा नित्य अविनाशी ताको मरणको भयहोनो यही जेवरिको सांपको खानोभयौ वेदबुधनाम पण्डित कहतहैं तथा तुहूं अपने मनमों बुभुक्षि स्वप्नको दोष दुखजो पूर्व कहे सो जागेही तें जाहिरे नाम नष्ट होत है पूर्व जो जागबे को लक्षणकहे तैसे जो जागतहै ताकों त्रयतापको जो ताप सो जाय नाम नष्ट होतहै तब रामनाम विषैं शुचिनाम पवित्र रुचि सहज स्वभावकरि होतिहै यह अर्थ है ॥ ७३ ॥

मू०। ज्ञानकीशकीकृपाजगावतीसुजानजीवजागित्यागिमूढ़तानुरागुश्रीहरे। करिविचारतजिविकारभजिउदार रामचन्द्र भद्रसिंधुदीन बन्धु वेदवदतरे। मोहमयकुहूनिशा विशालकाल विपुलव्याल सोयोखोयो सो अनूपरूपस्वप्नजूपरे। अबप्रभात प्रकटज्ञानभानुके प्रकाशवास नाशरोगमोहद्वेष निबिड़तमटरे। भागेमदमानचोरभोर जानियातुधान कामक्रोधलोभछोभनिकरअपडरे। देखतरघुबरप्रतापबीतेसंतापपाप ताप त्रिविधिप्रेम आपदूरहींकरे। श्रवणसुनि गिरागंभीर जागे अतिधीरवीरबरबिरागतोषसकलसन्तआदरे। तुलसिदास प्रभुकृपालुनिरखिजीवजन विहाल भंज्यौभवजालपरममंगलाचरे ॥ ७४ ॥

टी०। ज्ञान कीश जो श्री रघुबर ताकी कृपा सुजान जीव को जगावेहैं की जागिकरि मूढ़ता जो अज्ञानरूप निद्राताकोत्यागि करिश्रीहरिविषैं अनुरागकरु विचारतेविकार जो नाना बासना ताकों त्यागिकरि उदार जो श्रीरघुबर भद्रनाम कल्याणके समुद्र दीन जीवन्ह के बन्धुनाम हितकारी जाको वेदवदत नाम कहत हैं रेमन ताकोभजुमोह जो अज्ञानतनमय कुहू निशानाम अमावसकी रात्रीभई रात्री चारपहर की होतिहै यह अज्ञान रूपी रात्रि विशालनाम बड़ी है बहुत जो काल नाम समय सोई बड़ा सर्प भयौ तामें जो सोयो स्वप्न में पड़करि अपनो अनूप नाम आश्चर्य जो स्वरूप सतचैतन्यनाम आनन्द लक्षणजाको ताकोखोयौ तेहि रात्रिके समाप्तमो प्रभातरूप जोज्ञान सोईसूर्य ताको उदय होनो सोई प्रकाश सदृश तेहिकरि संसार संबन्धी जो नानाबासना सरोगनाम रोगसहित इहां जेहवस्तुमो बासना भई ताके नहीं मिलेतें जो क्लेश होतहै सोई रोग भयो तथामोह जो अ-

ज्ञान द्वेष जो अवरको हानि विचारनो सो सब निबिड़ नाम सघन तमनाम अन्धकार सोटरै नाम नाशभये तब मद जो बाहर प्रकटनाम जो गुप्त अभिमान सोई चोरभये भोर जानिकरि तथा यातुधान जो निशिचर तत्तुल्यकाम क्रोध लोभ छोभ नाम मन को चंचलता ताको निकर जो समूह सो अपडरे नाम प्रभुता अपनी नहीं करिसके हैं यह रीति तें रामजीके प्रताप के देखत सन्ताप जो संसार करि क्लेश तथा पाप तेहिकरि जो त्रिविधि ताप दैवकृत भूतकृत देहकृत ताको श्री रघुबर चरणविषैं जोप्रेम सोई आपनाम जलभयो सो पूर्वोक्त तापको दूरि कियौ ऐसे प्रभावयुक्त जो पूर्वोक्त गंभीर बचन ताको श्रवण करि अत्यन्त जो धीरबीर अर्थात् संसार के जीतने वाले जो जीव सो जागतभये जागिकरि संसार के लश्कर जो काम क्रोधादि ताको जीतबे के अर्थ श्रेष्ठ जो वैराग्य तोष जो संतोष सकल मद ते छमा करुना विवेकादि सोई सुभट भये ताको सन्तजन जो जगे हैं सो आदरें नामसत्कार करि राखतभये संसारके जीतिबे के अर्थ यह रीति करि तुलसीदास कहत हैं कि प्रभु जो कृपाल सो जीवजन को बिहाल देखि करि संसार के जाल को भंज्यौ नाम तोड्यौ परम मंगल को आचरण करत भये अर्थात् सन्मुख जीवन्ह के दुख को नाश करि सुखदेत भये यह अर्थ है॥ १४॥

मू०। खोटोखरोरावरेहोरावरेसोझूठोक्योंकहैंगोजानौसबहि
केमनकी। करमबचन हियेकहोन कपटकिये ऐसेहठजैसी
गांठीपानीपरेसनकी। दूसरोभरोसोनाहिंबासनाउपासना
कोबासवबिरंचि सुरनर मुनिगणकी। स्वारथकेसाथी मेरे
हाथीस्वानलेवादेईकाहूतोनपीररघुबीरदीनजनकी। सांप
सभासावरलबारभये देवदिव्यदुसहसासतिको जौआगेही
यातनकी। सांचेपरोपावोपानपंचनमेंपनप्रमाण तुलसीचा-
तकआशराममश्यामघनकी॥ १५॥

टी०। खोटो खरोतुमयेहु आपसो झूठकैसे कहूंगो झूठनहि कहबेमो हेतु कहते हैं कि अन्तर्यामी रूपते आप सब के मनको जानत हौ कर्म बचन हृदयते कहतहौं कपट छोड़िकरिऐसे हठ मेरे जीमो है कि जैसी पानीपड़ेतें सनको गिरह अर्थात् नहीं छूटत तैसो मेरो हठहै अब तेह हठको जनावत हैं दूसरो भरो-

सो नाहिं नाहिंनाम दूसरो जो साधन सोमेरो कल्याण नकरैंगे वासनानाम स्वर्गादिको प्राप्ति सोऊनहीं तथा उपासना इन्द्रादि देवता सम्बन्धी ताह्न की इच्छा नहीं काहे न हिंसा करत हैं स्वारथ के साथीनाम सेवारूप स्वारथ चाहत हैं मेरे नाम हसते हाथी श्वानकोलेवादेई नाम लेनोदेनो करनेवालेहैं अर्थात् भक्ति जन्म जब उनकी सेवा करैं समस्त आयुर्बल रूप जो हाथी लय करि तब श्वानरूप जो स्त्री पुत्र धनादि नश्वर विषय सो देत हैं काह्नको तो हे रघुवीर दीनजनकी पीरनहीं अर्थात् पूजादेवेको जो समर्थ ताके ऊपर प्रसन्नता असमर्थ जीवहम ऐसे पर कृपा नहीं यह हेतुतें सबके आशको त्यागकरि आपके शरण हैां जोत आप कहो कि ऐसी निष्ठा तुम्हारी नहीं केवल बात बनावत हो तेहपर कहतहैं सांप सभानाम सांपके दिव्यको सभासाबरनाम साबर मंत्रजीते मंत्रित जो सांप तेहदिव्य के सभामो हेदेव जैा हम लवार भयेनाम हारे तबन सहवेयोग सासती जो पीड़ाईया तनकीनाम सभशरीर को सो आपकरो आगेनाम आपके आगे है अर्थात् भगिन जायगोसांचे परोनाम जैादिव्यके सभामो सांचे भये अर्थात् जीतेतो एकबीड़ा पान पावो जेहतें पांचननाम पंच लोगजो आपके भक्ततिनमो मेरे प्रतिज्ञा को प्रमाणहोय कवन प्रतिज्ञा सोकहतहैं कि तुलसीपपीहाके सद्दशरामरूप जो स्वाती को श्याममेघतेहते भक्तिरूप जलके प्राप्ति को आशकियो है यह अर्थ है॥ ७५॥

मू०। रामकेगुलामनामरामबोलारा ख्योरामकाम इहैनामह्वै हैां कबह्नंकहतहैां। रोटीलूगानीकेराखैं आगेह्नं कोवेदभाखैं भलोह्वैहैतेरोतातेंआनन्दलहतहैां। बांध्योहोकर्मजड़गर्दगूढ़ निगड़सुनतदुसहहोतैा साहतिहैां। आरतअनाथनाथको-शलपालकृपालुलीन्हौंछीनदीनदेख्योंदुरितदहतहैां। बूझ्यौं ज्यौंहीकह्यौमैंह्नंचेरोह्वैहों रावरोजूमेरो कोऊकह्नंनाहिं चरणगहतहैां। मींजोगुरुपीठअपनाईगहिबांहबोलिसेवक सुखदसदाबिरदबहतहैां। लोगकहैं पोचसोन शोच संकोच मेरेब्याहनबरेखीजातिपांतिनचहतहैां। तुलसीअकाजकाज रामहीकेरीझेखीझेप्रीतिकीप्रतीतिमनमुदितरहतहैां॥ ७६॥

टी०। श्री रघुबर के गुलाम भये मेरो नामराम बोलो ऐसेर

रामजूराख्यौकोउनबीनकिंकरहोतहैतबवाको कामसुपुर्दहोत है
सोमेरो इहैकाम भयोकि है नाम हैअचरको जोनाम यहादोउ
स्वरूप श्रीजानकीजू श्रीरघुबरजूकोनामहो नाम हमकबहूं कहत
हौं अर्थात् चाकरीकी सुलभता देखावतहैं कि कबहूं कबहूंनाम
मात्र कहनोएतनोये चाकरीहै यहाप्रार्थना करतहैं कि हेरघुबर
अपने गुलामकै मेरो नामराम बोलाराखो चेत पूछौ कि कवन
उद्यम करौगे तोमैं दूसरो कामको नहीं हौं इहैकाम मोकोंदेव
कि तुम्हारो नाम है अचरको कबहूं कबहूं कहतहौं नाम कहत
रहूंगो एहअर्थ विषै राख्यौ पाठको राखो कियौ तथा रामराम
संबोधन दोबारआदरके अर्थहै अब चाकरीके फलकहतहैं रोटी
शब्द वस्त्रमात्रको करिभोजन ग्रहण है लूंगाशब्दतें वस्त्रमात्रको ग्रहण
भयो अर्थात् इच्छापूर्वकभोजन नीके राखिनाम नीकोप्रकारतें देत
हैं एहतें यहलोकको प्रयोजन सिद्धभयो अबपरलोकको सुचिताई
जनावतहैं कि आगेहूं को नाम परलोकको वेदकहतहैं कि तेरो
भलोह्वैहै अर्थात् वेदऐसोगवाही परलोकके कल्याणको विश्वास
देतहैं तातें आनन्दकों प्राप्तहोतहौं अर्थात् भगवत सेवाकरिलोक
परलोक दोउ कोनिर्वाह सुखपूर्वक होतहै यह विचारि जीव को
सेवकहोनेके अर्थ यत्नकरनो अवश्यचहिये यहउपदेशहै रामजू के
किंकर भयेके पहिलेको स्वरूप कहतहैं शुभअशुभ कर्मजो जड़ता-
ने हमको बांध्यो गर्वजो देहादि अभिमान सोई गूढ़ नाम छूटबे
लायकनहीं निगड़ नाम बेड़ी तेहकरि जेह बन्धनको पीड़ा सुनत
मात्र दुसह सांसतिकौं हम सहतहैं यहदशाविषै हमपुकारे हे
आरत अनाथन्हके नाथहे कोशलपाल कृपाल त्राणकरो यहमेरी
आरतवानी सुनिकरितेहबंधनतेंलीन्हों छोरिनाम छोरि लेतभये
अत्यन्त दीनदशा तथा दुरित जोपाप तेहते हमको जलतो देख्यो
बूझ्यौ नाम मेरीदुर्दशा देखि पूछतभये कि तेरो कौनप्रयोजन है
ज्यौंहीनाम जब स्वामी ऐसेपूछ्यो तब मैंहूं कहतभयौं कि रावरो
चेरोनामं नौकर ह्वैहै चेतयहकहो की जोबिकैहै सोकाह्नके बेचेते
तेहपर कहतहैं कि मेरो कोउकहौं नहींहै अर्थात् अवलंबरहित
अनाथहौंतातेआपके चरणको गहतहौंसोजो गुरुपीठनाम गुरुरूप
जोस्वामीसोमेरीपीठिठोकै अपनोकरि बोलिनामबोलायबांहपकड़
तबतें सेवकन्ह कों सुख देनेवालो सर्व्वदा विरद जो बाना वहतहैं।

नामधारण करतहैं अर्थात् रामजूको बानाभक्तन्हको सुखदाई है सो बाना भगवत् नामतथा तिलकादि हमग्रहणकरतभये यहां गुरुपीठनाम बड़ी जोपीठ ताकों मीजो नाम ठोको तथा बोलिनाम बोलाय बांहपकड़ि अपनोकरो काहे कि सेवकके सुखदेवेकों बाना वहतहो नाम धारण करतहो यह प्रार्थनाहै गुलाम होनो नीचको कामहै यह संदेहको छोड़ावत हैं लोगमोकों पोच नाम क्षुद्र कहेंगे सो मोकों शोच तथा संकोचनहींहै काहे कि व्याहकरनो नहीं तथा बरेषीनाम अगुआई अर्थात् व्याहकरावनो सोऊ नहीं अरु जाति पांति नहीं चाहतहैं तब जगतके निंदाकरवे को कौन चिन्ताकेवल अपनो अकाज यारघुवरके खीझेतेंतथा रीझेते सुकाज यही जो प्रीतिकी प्रतीति मन विषैं तेहतें आनन्द रहतहैं यह अर्थहै यहपदके विषै पथम तुकमो तथा मीजो गुरुपीठ याहुतुक विषैंश्रीरामजूके प्रत्यक्षत:करि अपनो कृतार्थता कहे तहां ऐसो संदेहभयो कि ऊपरभी साधन अवस्थाविषैं अपने प्रार्थना किये तथा आगेहु वाहीप्रकार बिनयकरत जातहैं मध्यमो यहपदविषैं सिद्धावस्थाको सवरूप भगवान्‌को ग्रहण करनो कह्यो तहां पूर्वापरकेविचारेते असंगत होतहै तेहदूषणको छोड़ाइबे के अर्थ यहा करि दोऊ तुकको अर्थ साधना अवस्था को स्वरूप प्रार्थना करि शब्दनकों लगाये औ चेत पहिले अर्थको प्रमाणकरैं तो यहसमाधानहै कि सिद्धावस्थाको मनोराज्यकरतहैकाहे कि मनोराज्यको अवरऊ पदकहेंगे यह हेतुतें पहिलऊ अर्थनों दूषण नहीं अथवा बिनय पत्रिका विषैं एक एक पद जोहै वाहीमो अभिप्राय परिसमाप्त होतहै पूर्वापरके संगतिकों यह ग्रंथविषै संदेह नहीं है यह अर्थ है पूर्वोक्त जो सब गुण कहे सो विचार करि तुलसी तुम्हारो किंकरभयो इतनी प्रार्थनाहै कि न्यारोकै नाम उत्तम दासन्हितें पृथक्‌करि जहां गरीब गुलामन्हि की गिनती होय तहां मैं हूं गिनो जाउं अर्थात् मेरो अधिकार नीचन्हके योग्यहै अपने मेलमों रहवे कों सब इच्छा करत हैं ॥ ७६ ॥

मू०। जानकि जीवन जगत जीवन जगत हित जगदीश रघुनाथ
राजीवलोचनराम। शरदबिधुवदनसुखशील श्रीसदनसहज
सुन्दरतन शोभा अगनितकाम। जग सुपिता सुमातु सुगुरु
सहित सुमीत सबको दाहिनो दीनबंधु काहूको न बाम।

आरतिहरणशरण दअतुलितदानि प्रणतपालकृपाल पतित पावननाम । सकल विश्वबंदित सकलसुरसेवित आगमनि गमकहैरावरेईगुणग्राम । इहैजानिकै तुलसी तिहारोजन भयौन्यारौकै गनिबौजहां गनेगरीबगुलाम ॥ ११ ॥

टी० । यह पदमें शब्दार्थ स्पष्टहै ॥ ११ ॥

मू० । देवदीनकोदयालदानिदूसरोनकोई । जाहिदीनताकहौंहैंा दीनदेखौंसोई । सुनिसुरनरनागअसुरसाहबतौघनेरे । पैतौ-लौंजौलौंरावरेन नेकुनयनफेरे । त्रिभुवनतिहुंकाल विदित बदतवेदचारी । आदिअन्तमध्यरामसाहबीतिहारी । तोहि मांगि मांगनो नमांगनोकहायो । सुनि सुभावशीलसुयश याचकजनआयो । पाहन पशुबिटप बिहगअपनेकरिलीन्हे । महाराजदशरथके रंकरावकीन्हे । तूगरीबको निवाजहैां-गरीबतेरो । बारककहिये कृपालतुलसीदास मेरो ॥ १८ ॥

टी० । हे दीनजीवकोदयालदानी दूसरोकोउनहींहै येतकहो कि यहतुमकैाजानि तेहमरकहेहैं किमैं अपनोदीनताको बहुतन्हतें सुनायोजेहते अपनेदीनता छूटबेकी प्रार्थनाकिये ताहूको दीन देखतभये अर्थात्अनंतऐश्वर्यकाहूकोनहीं देवतादिअपने२ घरमें साहबनामखाविन्दतोबहुतहैं पैतौलौंउनकीसाहबीहै जौलौंआप नेकुनाम किंचित् अपने नेत्रन्हकोनहीं-फेरतहैा अर्थात्यावत्कृपा कटाक्षहैतावत् इन्द्रादिकोऐश्वर्यहै भौंहकेटेढ़भयेकोउ ऐश्वर्यमान नहींहै एकरस केवलआपैकीसाहबीहै सोवेदसबकहिरहेहैंअवअ-पनेयाचबेमोंहेतुकहतहैं किजोयाचकआपकोयाचेसो फेरयाचकन कहायोअर्थात् पूर्णकामहैा सोअपनो गुणदेतहैायहीशीलस्वभाव तथा सुयशसुनिकरियहजनयाचबेको आयोहै कौनेर दीनकोअ-याचीकियेसोकहतहैं पाहन जोअहिल्यापशुजो बानरभालुविटप नाम यमलार्जुन वहा जेह २ वृत्तकेऊपरदृष्टिपड़ीसोसबकल्पवृक्ष रूपहोतभये बिहगनामजटायु जोगृद्धहै ऐसेअने कन्हकोआपअपने करिलियेहेमहाराजदशरथकेपुत्रजेहर२ को अपनोकियोमो२ रंक जोदरिद्रीताको राजाकरिदिये सोऐसेअापैहा अवआपनीप्रार्थना कहतहें। कि आपकोबानागरीबनेवाजहै औरमैंगरीबहैं।तुम्हारो दरबारके सो चतुर्वर्गादि जोऐश्वर्य ताकोनहीं चाहतहै श्रीमुखतें एकबार आपकहिदेव कि तुलसी मेरो है.यह गोसाईं की चतु-

राई है कि प्रत्यक्षमें काहू नहीं याचे पर जब स्वामी अपनो कहै तब कौन गुण कौन ऐश्वर्य तेहको न होतहै यह अर्थ है ॥ ७८ ॥

मू०। देवतूदयालदीनहौं तूदानिहौंभिखारी। हौंप्रसिद्धपातकी तूपापपुंजहारी। नाथतूअनाथकोअनाथकौनमोसों। मोसमान आरतनहिं आरतहरतोसों। ब्रह्मतूहौंजीवहौंतूठाकुरहौंचेरो। तातमातगुरुसखातूसबविधिहितमेरो। तोहिमोहिनातेअनेकमानियै जोभावै। ज्यौंज्यौंतुलसी कृपाल चरण शरण पावै ॥ ७९ ॥

टी०। आपदयाल मैंदीनहूं हांतैं लैकरिसखा पर्यन्तयहग्यारह नाताकहैयहके ऊपरकहतहैं कि अबकेतनो कहैं सब प्रकारकरि आपमेरे हितहो जाको एक संबंध होतहै सो तेहके देखतदुखी नहीं है।नेपावतयह सामान्यमनुष्यन्हकी रीतिहै आपचैसो अनाथ ताको कह। कहनो हम अपनेओते पूर्वोक्तसर्व संबंधको मानत हैं परआपको जोभावैसो एककोऊ मानिलेव जेहतेह प्रकारकरिके कृपाल तुलसी चरणके शरणको पावै यह प्रयोजन है ॥ ७९ ॥

मू०। देवऔरकासोंमांगियेकोमांगिबोनिवारै। अभिमतदातार कौनदुख दरिद्रदारै। धर्मधाम रामकाम कोटिरूपरूरो। साहबसबविधि सुजानदान खड्गसूरो। सुसमयदिनद्वयनिशानसबकेद्वारबाजै। कुसमयदशरथकेदानितैंगरीबनिवाजै। सेवानिर्गुणविहीनदीनतासुनाये। जेजेतैंनिहालकियेफूले फिरतपाये। तुलसिदासयाचकरुचिजानिदानदीजै। रामचन्द्रचन्दतूं चकोरमोहिं कीजै ॥ ८० ॥

टी०। चेतकहै औरतें मांगोसो नहीं काहे किजो मांगबेको निवारै नाशदूरकरै तयावांछितअर्थकौं देखदरिद्रता कौंदारैनाम नाशकरै ताहीसों मांगनो चतुर याचकको चाहिये सो आपको छोड़ि और कौनहै तो जब दूसरोकोऊ नहीं तबहम केहतें मांगें आपकैसे हैं।धर्मकोगृहकोटिन्हकामतें रूपहैरूरोनाम अतिसुन्दर जाकोतथा सबविधितें सबके साहबहैसुजान नाम हृदय के ज्ञाता हैदान रूप जो खड्गतामें सूरहै अर्थात् सूर जोहैं सो तरवार चलावने मो अति अह्लाद पावतहैं तैसे आप आनन्दतें दान देत है यह भावहैचेत कहो कि और भीदानी बहुतहैं तेहपरकहत हैं किसुसमयनाम सुन्दर समयमो अर्थात् जब भाग्य की उदय है

तेहु करि पूर्ण ऐश्वर्यवन्त्यौहै तव दोदिन निशाननाम नगारा सबके दरवाजेपर बजतहैं श्रोकुसमयके विषेंहेदशरथके पुत्रहेदानिश्राप शरीयन्हको निवाजत हो अर्थात् पिताके आज्ञाकरि अयोध्या ऐसी राजधानी त्यागकरि बनप्राप्तभयौ ऐसऊ समयमो प्राणतें अधिक प्रियाजोजानकी महारानी ताको हरण भयोऐसी जो विपत्तिको समय ताह्ममो विभीषण सुग्रीव ऐसेदीनको इहलोक परलोक के ऐश्वर्यकरिपूर्णकरतभये सेवातेंतरक सर्वगुणहीन जोअपनोदोनता सुनायेसुनिकरि जेहजेहको आपनिहालकियेसो आपकेक्रपादान को पायकरि फूलेफिरतनाम पूरणअभिलाष होकरि आनन्दविषें मगनहैं अर्थात् सेवरीअहिल्याने कौनसेवाकरी तथावानरभालुमो कौन गुणहैं परवेदशाख तेह सबको आपके अनुग्रहके संबंध करि कृतार्थरूपकहतहैं एकांगोभीति याचतहैं अक्षरार्थस्पष्टहै ॥ ८० ॥

मू० । दीनबंधुसुखसिंधुकृपाकर कारुणीकरघुराई । सुनहुनाथमन
जरत त्रिबिधिजरकरतफिरतबौराई । कबहुं योगरतभोग
निरतशठहठवियोगबसहोई । कबहुंमोहबसद्रोहकरतबहु
कबहुं दयाअतिसोई । कबहुं दीनमतहीन रंकरत कबहुं
भूपअभिमानो । कबहुं मूढ़पण्डितबिडंबरतकबहुं धर्म्मरत
ज्ञानी । कबहुं देखजगधनमयरिपुमय कबहुं नारिमयभासे ।
संसृतिसन्निपातदारुणदुख बिनुहरिकृपाननासे । संयमजप
तपनेमधर्मब्रतबहुभेषजसमुदाई । तुलसीदासभवरोगरामपद
प्रेमहीननहिंजाई ॥ ८१ ॥

टी० । ऊपरके तुकमो सबसंबोधनहै हेनाथ आपसुनो त्रिविधि जोअध्यात्म अधिभूत अधिदैवको जोताप सोईभयो त्रिदोषक ज्वर तेहकरि मन मेरो जलतहै तो जब अतिज्वरको ताप होतहै तब अनर्थक वचनबोलतहै तैसे मेरोमन नानाप्रकारकी बौराई करत है पूर्वजो बौराईकहै ताको देखावतहैं कबहुंजब मृत्यु स्मरणहोत है तब योगविषें तत्पर होतहै तथा जब अति अज्ञानको आवरण भयो तब परमेश्वर अरु अपनी मृत्यु दोऊ भूल्यो शरीरको अचल बूझिभोगमोतत्पर होतहै कबहुं शठमनहठात्कारतें बियोगके बस होतहै अर्थात् स्त्रीपुत्रादि अपने रुचि अनुसार न चले कछुकलह किये तबयह विचारभयो कि यह दुखरूपहै इनको छोड़नोई उचित है कबहुं मोहबसहोकरि द्रोह बहुतन्हतें करतहै अर्थात् देहपुत्रादि

बिषै ममताकी अधिकी होतिहै तब औरन्हकेद्रोहतें द्रव्यादिउपर्जन करिपालन लालन करतहै सोईमन कबहूं अतिदया करतहै अर्थात् भाग्याधीन जब कबहीं सत्संग को प्राप्त भये तब सज्जनन्ह के मुखते हिंसाको दोषसुनि जीवबिषै दया करनो यहभावहोतहै कबहूंदीन होतहै अर्थात् कोई प्रियवस्तुको नाश भयो अथवा रोगादि ग्रसित भयो तब दीनता ग्रहण करत है मति हीन नाम जब कोऊ पदार्थ बिषै अतिलोभ होतहै तब अपने स्वार्थ बस मतिभ्रष्ट होतहै रंकतर नाम कोई कार्य्यप्रारम्भ किये वाको सिद्धिअपने पौरुष ऐश्वर्यकरि न भयो तब औरन्हते दरिद्री कै भाव को ग्रहण करि प्रार्थना करत है कबहुं अभिमानी राजा होत है अर्थात् जेहि काल मो कोऊगर्ज न रह्यो तब ऐसो चित्त होतहै कि हमऐसो दूसरो कोऊनहीं कबहुं मूढ़ नाम जब कोऊ निषेध मो अतिरूप भयो तब कोऊको बुझायो बूझत नहीं कबहुं पण्डितहोतहै अर्थात् आपसावकाश मो रहै तब औरन्हको बुझावतहै बिडंबरत नाम कबहुंप्रतिष्ठा की रुचिभई तब जगतकी देखादेखीको बिशेष आडंबर करनलगे तथा कबहूं स्वर्गभोग की कामनाभई तो धर्ममो तत्परभये ज्ञानीनाम कबहुंकाहूके मुखतें आत्माको स्वरूप सुनिपाये तो हमहीं ब्रह्महैं ऐसो कहनलगे तथा कबहूं द्रव्यमों अतिलोभ भयो तो समस्तजगत धनमय देखे काहूते अतिबिरोध भयोतो शत्रुमय बिश्वको देखतभयो कबहूं अतिकाम-देवके आधीन भये तो समस्तजगत स्त्रीमय भासतभयो यह पूर्वोक्त संसृतिनाम संसार रूप सन्निपात जो मारकरोग अतिकठिन तेहिते उत्पन्न जो दुख ताको हरि कृपा बिन यह जीव नहीं नाशकरि सकै है चेत यह कहो कि एक रोगको औषधि अनेक होतहै तैसे याहू रोगको संयमादि बहुतऔषधिको समूहहै परन्तु तुलसीदासके बिचार ते श्रीरघुबर के चरणकमल के प्रेम बितरेक भवरोग नहीं जात है अर्थात् अन्य जो संयमादि साधन तेहिकरि संसाररूप रोगकमहोत है पर निर्मूल नहीं जात जाते नाशकरबेको केवल भगवत अनुराग मुख्य औषधिहै यह अर्थ है ॥ ८१ ॥

मू० । मोहजनितमनलागबिबिधिबिधिकोटिहुंयतनजाई । जन्मजन्म अभ्यासनिरतचित अधिकअधिकलपटाई । नयनमलिनपरनारि निरखिमनमलिनविषयसंगलागे । हृदयमलिनबासनामानमद जीवसहजसुखत्यागे । परनिन्दासुनिश्रवणमलिनभयेबचनदोष

परगाये । सबप्रकारसबभारलागनिजनाथचरणबिसराये । तुल-
सिदासब्रतदानज्ञानतपशुद्धिहेतुश्रुतिगावै । रामचरणअनुराग
नीरबिनुमलअतिनाशनपावै ॥ ८२ ॥

टी० । पूर्वपद विषें संसार रूप रोग कों भगवत अनुराग मुख्य औषधि कहे तेहि रोग की प्रबलता देखावत हैं सोहि तें उत्पन्न जो मल विविधप्रकार करि लग्यो है अर्थात् जीवको मलिन कियो है सो रामानुराग व्यतिरेक और कोटिन यत्नकरि नहीं जात तेहि रोग के प्रबलता मो हेतु कहत हैं कि जन्मजन्म को जो अभ्यास तेहकरि निषेधविषें तत्पर जो चित्त तेहमो अधिक अधिक विषया शक्तिरूप छोमल सो लपटि रह्यो है अब जौने अभ्यास करि मल होत है सो देखावत हैं नाना संसारी बासना तथा अभिमान अरुमदकरिहृदय मलिनभयो जीव सहज सुखके त्याग कियेतें अर्थात् स्वाभाविक जो सुखरूप अपनो स्वरूप ताके भूलेतें जीव मलीनभयो यह सब प्रकार कोमलको भारनाम समूह जीवकों लग्यौ सो अपने स्वामी के चरणकमल विस्मरण कियेतें अर्थात् जीवके मलीन होबेको हेतु अनेकपूर्व कहे परमुख्य हेतु भगवन्त विमुखता है संसार रूप रोग कों दखाय करि पूर्वपद में जो रामानुरागरूप औषधि मुख्य अन्य साधन गौन सिद्धान्तकिये वाहीकों पुष्टकियो शब्दार्थ स्पष्टहै ॥ ८२ ॥

मू० । काहूधैनआइगयौजन्मजाय । अतिंदुर्लभतनुपाइकपटतजिभजे
नरामबचनकाय । लरिकाईबीतीअचेतचितचंचलताचौ-
गुनीचाय । यौवनज्वरयुवतीकुपत्थकरिभयोत्रिदोषभरिमदन-
बाय । मध्यवयसधनहेतुगंवाईकृषीबनिज नानाउपाय । राम
विमुखसुखलह्यौनसपनेहुंनिशिबासरतयौतिहूंताय । सेयेनहि
सीतापतिसेवकसाधुसुमतिभलिभक्तिभाय । सुनेनपुलकितनकहे
नमुदितमनकियेजेचरितरघुवंशराय । अबसोचत मणिबिनु
भुअंगज्यौं बिकलअंगदलेजराघाय । सिरधुनिधुनि पछतात
मींजिकरकोउनमीतहितदुसहदाय । जिन्हलगिनिजपरलोक
बिगारयौतेलजातहोतठाढ़ठांय । तुलसीअजहुंसु मरिरघुनाथहि
तरयौगयंदजाकेएकनाय ॥ ८३ ॥

टी० । यहपदविषें अपने द्वारा अन्य बिमुख जीवन्ह को स्वरूप कहि उपदेशकरत हैं काहू ह्वै न आइ जन्मजाय नाम व्यर्थगयो चेत यह कहेकि नाना प्रकार को भोग बिलासकिये व्यर्थ कैसेकहतहौतेह

परकहतहैं कि मनुष्यको शरीरअति दुर्लभ पायकरि कपटजो नाना
कामना ताको त्यागकरि मनवच कायकरि रामजूको नहिं जो अ-
र्थात् स्त्रीपुत्रादि विषय सूकर कूकर योनिमोंभी प्राप्तहोतहै मनुष्य
शरीरको दुर्लभता केवल भगवतभजनके अर्थ है यह भाव है केहकत-
व्यतातें जन्मव्यर्थभया तेहकोदेखावतहैं बाल्य अज्ञानकरिगयो कुमार
किशोरको पायकरि चित्तविषै चंचलता को चौगुनी चावभई और
अवस्थाके अपेक्षातें चौगुनिकहैं यौवन ज्वररूप तामेंस्त्री भोगरूपकु-
पथकरि त्रिदोषभया नाम कफपित्तवायु तीनोंके प्राबल्य करि त्रिदोषज्वर
होतहै सोइहां राजस सामग्री को भोग तामसी जो मदिरा सुवारे-
श्यादि सात्त्विकी स्वर्गको भोगयही त्रिगुणमई वासना त्रिदोष तुल्य है
त्रिदोषभयेपर वायुहोत है सो कामदेवरूप वायुकरि भरिनाम पूर्ण
होतभयो अर्थात् जब वायुहोतहै तौभलौबुरा जो तेहको विचारनहीं
रहत तैसे इहां कौन कार्यकरना कौन न करना यहविचारते भ्रष्ट
भयो युवावस्थाकहि अब आगेको स्वरूपकहत हैं मध्यवयसनाम वृद्धत्व
युवाके मध्यको जो वयक्रमसो धनकेअर्थ गवांयो कृषीजो खेतीवनिज
नाम क्रयविक्रय करनो यहनानो उपायकरि मध्यअवस्थागयोबाल्यते
लेकरिके मध्यअवस्था पर्यन्त सुखके वास्ते नानाकर्मकिये परश्रीराम
जूतें बिमुखहोय कोऊ कर्मकरि सुखस्वप्नहूमो न पायो रात्रिदिवस
त्रिहुंताप नाम अध्यात्मादि जो त्रयताप तेहतें तयोनाम जलतरह्यो
जो करबेको चहिये सो न कियो श्रीरघुबरको तथा तिनके सेवकजो
साधु सुंदरमति जिनको तिनको भलीभक्ति भावकरि नहींसेवनकिये
तथा जोरन्ह के कल्याणार्थ श्रीरामजू नानाचरित किये ताको पुल-
कांकित होकरि न सुने औ न आनन्द मनकरि कहे सबशोचकरि
है मणि बिनरेका जैसे भुअंग नाम सर्प अर्थात् कुमारतें मध्यअवस्था
पर्यन्त शरीरमें पौरुष रहे है तेह पौरुष रूप मणिको व्यर्थ व्यापार
में समाप्तकरि अब जरा जो वृद्धत्व सो घायनाम अपने प्रहार करि
दलेनाम पीसतिहै तेहकरि अंग सब बिकलभये अब माथको पीटि
हाथको मलिकरि पश्चात्ताप करतहै यहदुसह दायनाम नहिंसहबे
योग्य जो वृद्धत्वरूप डाढ़ालग्यो तब कोऊभिलहितकारी नहींहोत
जेहके अर्थ अपने परलोक कों बिगारयौते सब ठांव नाम निकटठाढ़
होत लजात हैं अर्थात् जेह स्त्रीपुत्र के अर्थ जन्म कों खोये सो वृद्धत्व
अवस्थाको बातनहीं पूछत यह रीतितें दुर्लभ जो जन्म ताको खोय

करि क्लेशके समुद्र मों परयोजो जीवता को तुलसी कहतहैं किकबहूं श्रीरघुबर को स्मरणकरु चेत यह कहै कि मेरो आयुर्बल नष्ट भयो अब स्मरण कियेते कहा होयगो तेहपर कहत हैं कि गजेन्द्र जाके एकबार नाथ जो नाम सो कहिकरि क्लेशतेंपारभयो ऐसो बिचारि करि जितनी आयुर्बल रहिगईहै तितनीकरि भगवत भजन करनो तेहिकरि अवश्य कल्याण होतहै यहसर्व सम्मतहै८३ ॥

मू०। तौतूपछितैहैमनमींजिहाथ। भयोहैसुगमतोको अमरअगमतनु
समुझिधौंकतखोवतअकाथ।सुखसाधनहरिबिमुखवृथाजैसेश्रम
फलघृतहितमथेपाथ। यह बिचारतजिकुपथसंगतिचलिसु पंथ
मिलिभलेसाथ।देखुरामसेवकसुनिकीरतिरटहिंनामकरिगान
गाथ। हृदयआनुधनुबाण पाणिप्रभुलसेमुनिपटकटिकसे भाथ
तुलसीदासपरिहरिप्रपंचसबनाउरामपदकमलमाथ। जनि डर
पहि तोसेअनेकखलअपनायेजानकीनाथ ॥८४॥

टी०। पूर्व उपदेश किये ताको नमाने तेहप्रति कहत हैं अकाथ नाम व्यर्थ चेते ऐसो कहो कि हम सुखके निमित्त अन्य साधन करैंगे तेहप्रति कहत हैं भगवत बिमुख को सुखको अर्थ जो साधन सो व्यर्थ है जैसे घीके वास्ते जो जलको मथे तौ परिश्रम फलहोत है यह बिचारकरि कुपथ नाम वेदशास्त्र जाको निषेध कहत हैं कुसं-गति नाम भगवत् बिमुख को संग ताको त्यागकरि सुपथ जो वेद मार्ग तामो भलेसाथ जो साधु संग तिनते मिलकरि चलु अर्थात् सर्व इन्द्रिन्ह को कुमारगते सुमारग विषैं चलावनो यह भाव है इन्द्रिय सब निर्विषय नहीं रहिसकति है यह हेतुतें विषय देकरि संसार निवृत्ति करत हैं यह तुकमों नेत्र कर्ण जिह्वा हृदय शब्द करि मन बुद्धि चित्त इतने इन्द्रियन्ह को विषय दिये शरीर विषैं मस्तक श्रेष्ठहै ताहू को कर्त्तव्यता कहत हैं कि समस्त प्रपंच को त्यागकरि रामजूके चरण कमलविषैं माथ को नमित करु अर्थात् नानाविषय भोगके अर्थदीन होकरि अनेक विषयी जीवन्हके आगे नमित होतहै सो त्यागकरि रघुबर कों प्रणामकरु चेतयह कहैकि भरिजन्म नाना प्रपंच किये अबयह कर्तव्यतातें कहा होयगो तेह पर तुलसीदास कहतहैं कि अपनो पूर्वकरनी विचार करि मतिडरु तोसे अनेकखलन्हको स्वामी अपनो कियेहै अर्थात् छल त्याग करि जबही शरण होय तबही कृतार्थ होतहै ॥ ८४ ॥

मू०। मनमाधवकोनेकुनिहारहि। सुमुशठसदारंककेधनज्यौंक्षण क्षणप्रभुहिसंभारहि। सोभाग्यीलज्ञानगुणमन्दिरसुन्दरपरम उदारहि। रञ्जनसन्त अखिलअघगञ्जनभंजनविषयविकारहि। जौचिनयोगयज्ञव्रतसंयमगयोचहहिभवपारहि। तौ जनितुलसिदासनिशिवासरहरिपदकमलविसारहि॥ ८५॥

टी०। रे मन तोको उचित तो ऐसोहै कि दरिद्रीजैसें अपने धनको नहिं भुलतहै तैसे प्रभुको संभारहि नाम स्मरण करु जो ऐसो नबने तो रेशठ नेकुनाम किञ्चिततौ भगवान्को देखु औने विषयके निमित्त अन्यत्र जात है सो कौनविषय कौनगुण ऐश्वर्य भगवान् मों नहीं है सोई सबगुण देखायें जौ योगादि साधनके श्रमरहित संसार निवृत्ति की इच्छा होय तौ तुलसीदास कहत हैं कि भगवान् को अहर्निशि मतिभूल॥ ८५॥

मू०। इहैकह्यौसुतवेदचहूं। श्रीरघुवीरचरण चिन्तनतजिनाहिन ठौरकहूं। जाकेचरणविरंचिसेइनितसिधिपाई शंकरहूं। शुकसनकादिमुक्तविचरततेउभजनकरतअजहूं। यद्यपिपरम चपलश्रीसंततथिरनरहतिकतहूं। हरिपदपंकजपाइअचल भइकर्मवचनमनहूं। करुणासिंधुभक्तचिन्तामणिशोभासेवतहूं। औरसकलसुरअसुरईशसबखायेउरगहूं। सुरुचि कह्यौसोइसत्यतातअति परुषवचनजबहूं। तुलसिदासरघुनाथविमुखनहिंमिटैविपतिकबहूं॥ ८६॥

टी०। अपने सिद्धान्त को प्रमाणदेत हैं स्वायंभुवमनु के पुत्र उत्तानपाद ताको दो स्त्री सुरुचि सुनीति सुरुचि के उत्तम पुत्र सुनीति के ध्रुवजू सो राजाको ममता छोटीस्त्री जोसुरुचि तापर विशेष रह्यौ एकसमय सुरुचिकेसाथबैठे उत्तमकोगोद मो लिये रहे ध्रुवजू की पांचवर्षकी अवस्था खेलतेहुयें राजाके निकट आय करि सिंहासन पर जावे को चाहे राजा न बोलायो तेहि समय मो सुरुचि बोलति भई कि तुम बालक अज्ञान हो राजसिंहासन के ऊपर चढ़िवे की इच्छा होय तो तपस्या तें भगवान् को आराधन करि मेरे गर्भ ते उत्पन्न होउ तब राज्य पद मिलेगो यह वचन सुनिकरि यद्यपि अवस्था छोटो रही तथापि क्षत्रीको बालक नहीं सहिसके रोवते रोवते सुनीति जो अपनी माता तेहके निकट आये और बालकन्ह के मुख तें वृत्तान्त सुनि करि

सुनीति बोलत भई सो वचन सब पूर्व गोसाईं कहि आये अन-र्थार्थ स्पष्टहै यह कहतभई कि हे पुत्र करुणाके समुद्र भक्तन के चिन्तामणिरूप जाके सेवाहू करते जीवको शोभा होत है अर्थात् सेवा धर्म नीचहै पर भगवान् की सेवा बड़ाई देतिहै चेतवालक हे अज्ञानते ऐसी जाकी बुद्धिहोय कि और कोऊकी सेवाकरें तो शीघ्र प्रसन्न होय सो नहीं काहे कि और जो सकल देवता असुर जो ईश कहावत हैं सो सबको उरगकहूनाम छः जोसर्प ताने खांयलियो अर्थात् षटऊर्मी शोक मोह क्षुधा पिपासा जरा मरण यही छओ सर्परूप तेहते कोऊ सुर असुर बच्यो नहीं तो आपै जो दुःखरूप हैं सो तुमको सुखी कैसेकरैंगे यहभाव है यह हेतुतें उत्तमपद प्राप्ति के अर्थ भगवान् को आराधन करवे को सुरुचिजो सौति सौति वानेकह्यो सोई बात सत्य है जबहूं नाम यद्यपि अति परुषनाम अति कठोर बचन कह्यौ तथापि रामजू तें विमुख जीवको विपत्तिकाहू प्रकारते नहींछूटत यहसर्व सम्मत है यह तुलसीदासजू अपने मनको उपदेश किये सोई सब जीवों को बूझनो चाहिये यह अर्थ है॥ ८६ ॥

मू० । सुनुमनमूढ़सिखावनमेरो । हरिपदविमुखकाहूनलह्योसुख शठयहसमुझसबेरो ।। बिछुरेशशि रवि मननयनन्हतें पावत दुखबहुतेरो ।। भ्रमतश्रमितनिशिदिवगगनमहंतहंरिपुरा-हुबड़ेरो ।।यद्यपिअतिपुनीतसुरसरितातिहुंपुरसुयशघनेरो ।। तजेचरणअजहुंनमिटतनितबहिबोताहूकेरो ।। छुटैनविपति भजेबिनुरघुपतिश्रुतिसन्देह निबेरो । तुलसिदास सबआश छांड़िकरि होहुरामकरचेरो ॥ ८७ ॥

टी० । भगवत् विमुखोको सुखनहीं यह पूर्वपदमें कह्योवाही को फेरपुष्टकरतहैंरे मूढ़मन मेरो शिक्षाको सुनुभगवत्पदविमुख भये काहूने सुख नपायोहै यह सबेरो समझुरेशठ अर्थात् यावत् मनुष्यशरीरहैतावत्सबेराहै यहआयावत्पशुरूपशरीरविषेहै तावत् सबेराहै समुझाले पछिलेनुकसें यह कह्योकि भगवत्पद विमुखभये काहूने सुख न पायो सो देखावतहैं साक्षात् जगतके कारण जो सूर्य भगवान्के नेत्रतें तथा चन्द्रमा मनते पृथक्भये सो बहुतदुख पावतहैं कौन दुखसो कहत हैं भ्रमणकरत श्रमित होतहैं रात्रि दिवस आकाशविषैं ताहूपर राहु ऐसोबड़ो शत्रु बन्यो है अर्थात्

जगतके कारणरूप जो चन्द्र तैसो सूर्य सोउ भगवान तें पृथक् भये घूमत फिरतहैं तथा प्रभुतें बसित हैं अन्य जो तुच्छ जीव विमुख होय ताके लेखेको को कहिसकै है यह भाव है जगत के पावन करनेवाली जो गंगा सोऊ चरण के त्यागकिये तें खिरताके सुख कों छांड़िकरि बही फिरत है तुच्छ जीव विमुख होकरि संसार प्रवाह में बहै याको कहा कहनो बेद को हृदय प्रमाण देकरि सिद्धान्तकों दृढ़करतहैं अक्षरार्थ स्पष्ट है ८७ ॥

मू० । कबहूंमन बिश्रामनमान्यो । निशिदिनभ्रमतबिसारिसहज सुखजहंतहंइन्द्रिन्हतान्यो । यदपि बिषय संगसहेदुसहदुख बिषमजालअरुझान्यो । तदपिनतजतमूढ़ममताबस जानतहूं नहिंजान्यो।जन्मअनेककियेनानाविधिकर्मकीचचितसान्यो। होइनबिमलविवेक नीरबिनुवेदपुराण बखान्यो । निजहित नाथपितागुरुहरिसोंहरषिहृदयनहिं आन्यो । तुलसिदास कबतृषाजायसरखनतहिजन्मसिरान्यो ॥ ८८ ॥

टी० । जीवकेसुखनहीं पाइबेमें हेतुकहतहैं कबहूं तोयामन ने विश्राम नमान्यो काहेनहीं मान्यौ तामें हेतु कहतहैं सहज सुख जो स्वरूपानन्द ताकों बिसारणकरि रात्रि दिवस विषयवासना में भ्रमत है ताहूमें हेतु कहत हैं जहां तहां इन्द्रिन्ह ने तान्यो है अर्थात् जौने २ को विषय तौने तौने विषय में तेहि तेहि इन्द्रिन्हकेसाथ खींच्यो फिरत जैसेनटको बंदरयद्यपि विषय सम्बन्धकरि नानादुःखभोगकरतहै विषमजोजाल विषयरूपतामें अरुझान्यौ नास बझिकरि तेहको जानिकरिभी नहींजान्यौनाम नहीं छोड़तहै तेहनहीं छोड़बेमें हेतु जेहतें यामें अति ममता बस मूढ़ भयो है तेह ममता होबे कों हेतु कहत हैं अनेक जन्म में किये जो नानाविधानके कर्म सोईभयो कादो तेहि विषें चित्त सनिगयो है अर्थात् फलके अर्थ कर्मकिये तेह फलके वासना रूप ह्वै रह्यो इहां हेतुहेतुमद्भावहै मनके विश्राम नहीं मानेते जीव को संसार में मन इन्द्रिन्ह के आधीन होकरि चंचलभयोनाना दुःखको अनुभव किये हू नहीं छोड़ैहै सो ममतावसतेहममता होबेमें कर्मके फलकी जो वासना सो हेतुभयो यह क्रमहै यह दुःखतें छूटै कैसे ताको उपायकहतहैं निर्मलजल बितरेककादो नहींभीयो जात सो इहां बिमल जो विवेकनाम परमेश्वर सत्य

अन्यत् मिथ्या सोई जलरूप तेहिकरि कर्मबासनारूप कीचछूटत है यह वेद पुराणको सम्मत है तेह विवेक के नाशहोवे सो हेतु कहतहैं अपनाहितस्वामी पितागुरु ऐसोजो हरिताकोंहर्षकरि हृदयविषैं नजे आये तौ तुलसीदास कहत हैं कि संसारको क्लेश कैसे जाय तामें दृष्टान्त देतहैं पिपासाके दूरकरवे को सरोवर खोदनेलगेसो खोदतेर जन्मसमाप्तभयोजलमिल्योनहीं तो पिपासा जायकैसे अर्थात् कुआंकेखोदवे समानविषय संपादनकेअर्थ नाना यत्नतेहकरि सुखहोयगोयही वासनाजलतुल्यभई सोजैसे मरुस्थल में कूआंखोदनेलगे तहांजलहैनहींतौ कैसेमिलै तैसे विषयमेंसुख हैनहींतौ विषयकेप्रयासकरि सुखकैसे मिलैसो जबविवेकको उदय तब विषयादि विषय मिथ्या ज्ञान होय सो विवेक परमेश्वरवि-मुखभयेते नष्ट होतहै फेर भाग्यकरि जबजीव भगवत् सन्मुखहोय साधु गुरुके अनुग्रहकरि तब विवेकहोय तेहकरि विषयादि वा-सनाको त्यागकरु भगवत् भजनमें निष्ठा यह क्रमतें संसार दुःख को नाश होतहै यह अर्थ है ॥ ८८ ॥

मू० । मेरोमनहरि हठनतजै । निशिदिन नाथदेउंसीख बहुबिधि करत सुभावनिजै । ज्यों युवतीअनुभवति प्रसवअतिदारुण दुखउपजै । ह्वैअनुकूलबिसारि शूलशठपुनिखलपतिहिभजै । लोलुपभ्रमतगृहपशुज्यौं जहं तहं सिरपदत्रानबजै । तदपि अधमविचरततेहिमारगकबहुंन मूढ़लजै । होंहार्‌यौकरि यत्नबिबिधिबिधि अतिशयप्रबलअजै । तुलसिदासबसहोइ तबहिंजबप्रेरक प्रभुबरजै ॥ ८९ ॥

टी० । मनकी वृत्ति संसारतेनहीं फिरैहै तेहपरकहतहैं किहे हरिसुभावनिजैबासन विषयजोअनुराग सोई है निजस्वभावताको ताहीको करतहै सिखावन हमबहुत प्रकार से कियेपर तेहहठ को छोड़तनहीं नहींछोड़येसो दृष्टान्तदेतहैं किजैसे स्त्री प्रसवनाम बालकके उत्पत्ति कालको अति जो दुःखताको अनुभव करतिहै तथापि भोग सुखके लोभकरि तेहशूलकों बिस्मरणकरि शठनाम अज्ञ अनुकूलनाम सन्मुखह्वैकरि फेरिखल जो विषयोत्पत्तिताकों भजैनाम सेवनकरतिहै अर्थात्मरणान्त क्लेश जानिकरिभीसंभोग करैहैतैसे मेरोमनपरद्रव्य परस्त्रीविषे बासनाकर्त्ताको दृष्टान्तदेत है गृहपशुनाम कूकर पदत्राननाम[illegible]समब उपायकरियके

पर अतिशय प्रबलहै अजयनाम इंसतेओोतिवेयोग्य नहीं यह हेतु तें तुलसीदास कहतहैं किप्रेरका जौआपप्रभुसो जब याकों बरजें तब मेरे बस होय दूसरो उपाय नहीं है स्वामी ॥ ८९ ॥

मू०। ऐसीमूढ़तायामनकी। परिहरिरामभक्तिसुरसरित आस करतओसकनकी। धूमसमूहनिरखिचातकज्यौंतृषितजानि मतिघनकी। नहिंतहंशीतलतानवारि पुनिहानिहोत लोचनकी। ज्यौंगचकांचबिलोकिसेनजड़ छांहआपनेतनकी। टूटतअतिआतुरअहारबसछतिबिसारिआननकी। कहंलों कहौंकुचाल कृपानिधिजानतहोगति जनकी। तुलसिदास प्रभुहरहुदुसह दुखकरहुलाजनिजपनकी ॥ ९० ॥

टी०। फिरमनकी गतिकों देखावतहैं कैसी मूढ़ताहै कि राम जी की भक्तिरूप जोगंगाताको त्यागकरि ओसजोसीत ताकेकण को आश करतहै इहां ओस कण सदृश भक्तितें अन्य साधन को ग्रहण दृष्टान्तदैकरि मूढ़ताको जनावत हैं धूमके समूह को देखि करि पिपासित जो पपिहा तेहधूम को मेघकी प्रतीतिमति विषें जानिकरि दृष्टि देतहै पर तहां शीतलता तथाजल नहीं है केवल धूमविषै दृष्टिदियेतेनेत्रको हानिहोतिहैअर्थात् लाभकछूहोतनहीं अपनीदृष्टि मन्द होतहै तैसेभगवत् भक्तिव्यतिरेक अन्य साधन विषें प्रयास करि व्यर्थ आयुर्बल को नाश होतहै दूसरो दृष्टान्त देतहैं गच कांच नाम शीशाकी पृथ्वीतामें सेनजो बाज जड़ नाम अज्ञ अपने शरीरकीछाया देखि अहारकेवश अतिआतुर ह्वै करिटूटत नाम धौरपक्षीजानि पकड़िबेको दौड़तहै अपनेमुखकी छतिनाम घावबिसारि अर्थात् शीशाके गचसो पक्षीहैनहीं केवलअपनेप्रति बिम्ब पक्षीजानियामें चोंच चंगुलचलायेतें ताकोटूटनोफलहै तैसे विषयादि मो सुखकी प्रतीतिकरि नानाप्रयास कियेते परिश्रम मात्रफल मिलतहै वामें सुखतीनकालनहींमिले कहांते दोदृष्टान्त करिमनके मूढ़ताको देश मात्रजनाये आगेकहतहैंकि याकेकुचाल को कहांतककहैं हे कृपानिधि तेहमन कृत यहजनकी जोदुर्गति सो आप जानतहो तुलसीदास प्रार्थना करतहै हे प्रभु अपनी जो पणनाम प्रतिज्ञा अधमोद्धारनादि ताकी लाजकरि यह मन कृत दुसहदुःखको हरणकरो ॥ ९० ॥

मू०। नाचतहीनिशिदिवसमर्यो। तबहीतेनभयोहरिथिरजबते

जीव नाम धर्यो । बहु बासना विविध कंचुक भूषण लोभा-
दि भर्यो । चर अरु अचर गगन जल थलमें कौन न स्वांग न कर्यो ।
देव दनुज मुनि नाग मनुज नहिं याचत कोउ उबर्यो । मेरो दुस-
ह दरिद्र दोष दुख काहू तौ न हर्यो । थके नयन पद पाणि सु-
मति बल संग सकल बिछुर्यो । अब रघुनाथ सरण आयो जन भव-
भय बिकल डर्यो । जेहि गुण तें बस होहु रीझि करि सो मोहि सब
बिसर्यो । तुलसिदास निज भवन द्वार प्रभु दीजै रहन पर्यो ९१ ।

टी० । नाचतही नाना प्रकारनि संबन्ध करि बारंबार जो जन्म यहि नाचको नाचने रात्रिदिवस मरतहैं जो यह जन्म मरणरूप नाच जीवको सर्व कालिक होयगो । छूटनेके अर्थ यत्न करनो व्यर्थ होयगो करि निश्चल जीवके संसार छूटि सकै । अब जे कहत हैं तबतें यह जीव स्थिर न भयो हे हरि जबतें जीव ऐसो नाम धर्यो अर्थात् तुम्हारे स्वरूप विषैं प्राप्त रह्यो तब विभागु रह्यौ नहीं केरु जीव कहलाविजा मायाके आवरण करि शरीर संबन्धसों आपकेस्वरूपतें पृथक जीवत्व को अभिमानी भयो तेहि हेतु नानानाच नाचतहै यह भाव है अब नाचको स्पष्ट करि देखावतहैं यौ नाचै होय सो भये कार्य तैसे यह जीव बहुत जो वासना विविध प्रकारकी कंचुक नाम वस्त्र अरु भूषणादि के लोभतें भर्यो । चर जो चलनेवाले जीव अचर जो अड़े हैं तिन्ह को प्राप्त होकरि आकाश जल थल में कौन कौन स्वांगन कर्यो अर्थात् नाना योनि विषैं जन्म लेके अनेक वासना के वश होकर असंख्य स्वांग करि नाचनाच्यो जैसे नाचनेवाला याचै है तैसे देवादि हमारे याचवेते कोउ नहीं उबर्यो नाम बच्यो तिनहू याचवेतें काहू सिद्धि लाभ होय पर कहत हैं कि मेरो दुःसह जो दरिद्र को दोषकरि दुख काहू ने नहीं हरण कियो अर्थात् विषयवासना सब योनि विषैं है तिनहीपर जो मैं याचकता छूटै ऐसो दान काहू ने न दियो अब अपनी पौरुषहीनता देखावत हैं नेत्र हाथ पांवके सुन्दर बुद्धिको जीवन नाना इष्ट है गये सबको संग बिछुर्यो अर्थात् इन्द्रियनकी जो प्रबलता सो गई अब हे रघुवर यह जन संसार भयके व्याकुलतातें डर करि आपके शरणको आयो चेत अबको ऊ चाकरी हम सोंचा होती जेह गुणन्ह करि रीझि खुश होत हैं सो मोको सब भूल्यो है अर्थात् सर्व प्रकार के निकम्मे हैं केवल अपने गुण दीनबंधुतादि बिचारि करि तुलसीदासको अपने ड्योढ़ीके दरवाजेपर पड़ो रहने देव हे प्रभु ९१ ॥

मू० । माधो जू मोसम मंद न कोऊ। यद्यपि मीन पतंग हीनमति मोहिं नहीं पूजैं ओऊ । रुचिर रूप आहार वश्य उन्ह पावक लोह न जान्यो। देखत विपति विषय न तजत हौं तातें अधिक अयान्यो। महा मोह सरिता अपार महँ सन्तत फिरत बह्यौ।। श्रीहरि चरण कमल नौका तजि फिरि २ फेन गह्यौ। । अस्थि पुरातन छुधित स्वान अति ज्यों भरि मुख पकस्यौ । निज तालू गत रुधिर पान करि मन सन्तोष धस्यौ। परम कठिन भव व्याल ग्रसित हौं त्रसित भयो अति भारी । चाहत अभय भेक शरणागत खगपति नाथ विसारी। जलचर वृन्द जाल अन्तरगत होत सिमिटि एक पासा। एकहि एक खात लालच वस नहिं देखत निज नासा । मेरे अघ शारद अनेक युग गनत पार नहिं पावै। तुलसीदास पतित पावन प्रभु यह भरोस जिय आवै ॥ ९२ ॥

टी० स्पष्ट है पतङ्ग जो शलभ चिराग को जो रुचिररूप ताके वस मछली अहारके वश अग्नि अरु लोहाको नहीं जानि शरीर दियो। औ मैं मनुष्य शरीर के संबन्ध करि विषय भोग में विपति को देखिकरि न त्याग करत हौं यह हेतुतें मीनादि जो मन्द जीव ताहूतें अधिक अज्ञान हौं अज्ञानरूपी नदी जो अपार तामें बहे फिरत हौं पार होबे को अवलंब जो श्रीहरि चरणकमल रूपनाव ताको त्यागकरि फेरि फेनको पकड़त हौं अर्थात् मुख्य उपाय त्याग करि फेनरूप जो अन्य नाना साधन ताको आश्रय करत हौं विषय भोगकी तुच्छता विषै दृष्टान्त देत हैं पुराने हाड़को अतिभूखा कुत्ता जैसे भरिमुख पकड़े सो हाड़ लग्यो सो मुखमें तेहकरि चल्यो जो अपने तालूते प्राप्त रुधिर ताको पानकरि मनविषै सन्तोष कस्यौ अर्थात् सूखे हाड़में रुधिरको अभाव है अपने मुखको रुधिर सो हाड़तें प्राप्त मानि करि स्वान सन्तोष करतभयो तैसे सूखे हाड़ तुल्य जो इन्द्रिन्हको विषयरूप रस गन्धादि तामें सुख तीनों काल में नहीं है आत्मा जो आनन्द रूपसो अपने स्वरूपको आनन्द तेहको विषयादि विषै अध्यारोप करि अज्ञान वश विषैमें सुखबुद्धि करत भयो अर्थात् कूकर सदृश मैं मन्दबुद्धि हौं हे भगवान् दूसरी अज्ञता देखावत हैं कि संसार रूप सर्प परम कठिन ताने ग्रास कियो तेहकरि भारी त्रसित भयो हौं तेहते अभय भिक्षुकाके शरणागत करि चाहत हौं खगपति जो गरुड़ ताके स्वामी जो आप

ताको विस्मर्णकरि अर्थात् जो आपके शरणहोय ताजैसे गरुड़सर्प को नाशकरैहै तैसे आपको शरण संसार निवृत्ति करैहै सो ऐसी मेरीमन्दता जो आपको भुलिकरि भिजुकारूप जो नानाविषय भोग ताहीके अवलंबकरि संसाररूपसर्पते अभयचाहतहौं अर्थात् भिजुकाको सर्पखायलेतहै तैसेसंसार प्रवाह सो भोगकरि विषैको नाश होतहै तो जोआपै नाशभयो सो औरको अभय कैसेकरैगो यहभाव है यद्दा संसाररूप सर्पने भेकरूप जो हम ताको ग्रास-करिलियो वाके मुखमो पड़करि अभय चाहतहौं पर गरुड़ नाथ जो आपताके शरणागतको विस्मरणकरि यह अन्वयहै मछलीको समुह जालके अन्तर्गत नाश सिमिटिकरि एकपासो नाश होकरै होतहै तहांऊं एकजोबड़ी सोएक छोटीको खायहै लालचके वश अपनोनाश नहींदेखैहै अर्थात् कालकेमुखमो आपड़ेहै ताको भूलि अनेकद्रोह बुद्धिते औरन्ह को हानि करि अपनो जीविका मानत हौं इतनी अज्ञानता अपनोजनाये समस्त मेरेपाप को अनेकयुग पर्यन्त गिनतर सरस्वती नहींपार पावैगी तद्यपि हेप्रभु आपको पतितपावनादि बाना यहविचारि तुलसीदासको अपनेकल्याण होवेसो भरोस जियविषे आवतहै ॥ ९२ ॥

मू० । कृपासोधौं कहाविसारीराम । जेहिकरुणासुनिश्रवणदीन दुखधावतहौतजिधाम । नागराजनिजबलविचारिहियहारि चरण चितदीन्ह । आरतगिरा सुनतखगपति तजि चलत विलम्ब न कीन्ह । दितिसुत त्रासत्रसित निशिदिन प्रह्लाद प्रतिज्ञाराखी । अतुलितबलमृगराज मनुजतनु दनुज हत्यो श्रुतिसाखी । भूपसदसिसबन्हपचिलोकिप्रभु राखुकहौनर नारी । बसन पूरि अरि दर्पदूरि करिभूरि कृपादनुजारी । एकएकतेरिपुत्रसितजन तुमराखेरघुबीर । अबमोहिंदेत दुसहदुखबहुरिपु कसन हरहुभवपीर । लोभग्राहदनुजेश क्रोधकुरुराज बन्धुखलमार । तुलसिदास प्रभुयहदारुण दुखभंजहुरामउदार ९३ ॥

टी० । पूर्वनाना प्रकारतें प्रार्थनाकियेपर भगवत आविर्भावको प्रकाश कहूंनहीं देखिपड़ो तेहिपर कहतहैं अक्षरार्थ स्पष्टहै नाग राजनाम गजेन्द्र ताकेनिमित्त खगपति जोगरुड़ताको त्यागकरि चलते विलम्ब न किये तहांगरुड़के त्यागकरवेसो यहहेतु है कि

गजेन्द्रको क्लेश सारखकरि हमकौनहैं कैसे चलनो चहिये यहसुधि भगवान्कों भूलिगई तौ को गरुड़परचढ़ै यद्यभगवान् विचारे कि गजेन्द्रके क्लेशको जोदुःखमेरे हृदयमेंहै सोगरुड़को नहीं तेहहेतु गरुड़तें अधिकशीघ्र हमपहुंचेंगे यहबूझि गरुड़को छोड़िदियो यह भावहैदितिसुत नामहिरण्यकशिपुराजन्हके सभामें सबराजन्ह को अवलोकनकरिनरनारिनाम नरके अवतार जो अर्जुन ताकी स्त्रीजो द्रौपदीसो कहतभई कि हेप्रभु राखुनाम रक्षाकरो अर्थात् द्रौपदीको चीर जबदुश्शासन खींचनलग्यो तबप्रथम यहअभिमान रह्यो कि पांचोंभाई मेरेपति अतिपराक्रमी विद्यमान हैं तो कैसे मेरीपति जायगी सो राजायुधिष्ठिरजू यामें हारबेके हेतु करि सिरनीचे करि लिये अर्जुनादि चारों भाई राजाके आधीन कछू नहींकरिसके तबद्रौपदी इनतेंनिराशहोय भीष्माचार्यादि महान के ओर देखतभई येऊसब मायनीचे करिलिये तब द्रौपदी अपने हाथते वस्त्रकोंपकड़तभई फेरविचार्‌यो कि मैंअबलाहौ मेरेपकड़े तेवस्त्रकैसेथंभिगो यहबूझिवस्त्रको छोड़िकरिदै ऊहाथ उठायकहत भई कि हेप्रभु अपने शरणकी लाजकरि मेरी पति राखौ अर्थात् यावत्किंचित्अपने पौरुषादिकोअभिमान रह्यौ तावत् भगवान् नहीं प्रकटभये जबसर्वप्रकारते निरालंब होकरि द्रौपदी पुकारतभई तब दनुजारि जो श्रीकृष्णचन्द्र स्वामी बड़ीहै कृपा जाकी सोवस्त्रकों पूरिनाम पूर्णकरि देतभये अर्थात् अपनी अनन्ततावस्त्र मे डारिदियो तेह कर्तव्यतातें अरि जोदुर्योधनादि ताके गर्वको दूरिकरिदियो यहअर्थहै एकएकशत्रुकरि त्रसितजोजन गजेन्द्रादि तेहसबको आपराखेनाम रक्षाकरतभये हेरघुवीर औ मोकोतो बहुत शत्रुइकट्ठे होकरि दुःसहदुखदेतहैं तौनजो संसारको पीर ताकोकाहे न हरणकरतहौ अर्थात् अनेकन्हको रक्षाकरि बहुत परिश्रमतें जौन यश मिल्यौ सो एकै जगह मिलतहै अनेक शत्रु करि क्लेश दिखावतहैं लोभरूप ग्राह हिरण्यकशिपुरूप क्रोधकुरुराज दुर्योधन ताको बंधु दुश्शासन खलरतू समारनाम कामदेव अर्थात् ग्राहे लीलिलेतहै तैसे लोभ आवरण करतभयो अरुहिरण्यकशिपु समयसमयपर वचन अरुक्रियाते ताप करतरह्यौ तैसे क्रोधकालपायकरि जलावतहै तथा दुर्योधन युवा रूपसंधि करि नंगा करनेको चाह्यौ तैसेकामदेव युवारूप संधिपाकरि निर्लज्ज

कियो चाहतहै इहांसनरूप गजेन्द्रको हे किग्राहके ग्रासकिये ते गजेन्द्र व्याकुलभयौ तैसेलोभव्याप्तभयेमनव्याकुल होतहै अरुचैतन्य आत्मारूप प्रह्लादजू अर्थात् हिरण्यकशिपु को कियौ ताप देवेको नानाउपाय सो प्रह्लादजू को स्पर्शन भयो तैसे क्रोधादि कृत जो नानाताप सोजीवके वास्तव स्वरूपमेभी स्पर्शनहीं तथा बुद्धिरूप द्रौपदी काहे कि जैसेदुश्शासनके बसपरेते द्रौपदीको व्याकुलता तैसेकामके आधीनभये बुद्धिकीभ्रष्टता यह समताहै सो भगवान् एक शत्रुके त्रासते जो आपको पुकारे ताके दुःखके देखवेको आप समर्थ नहीं भयेअब एकके ऊपर इतने शत्रुकरि दुःसहक्लेश होत है आपकी करुणा कहां गई अब अपनी कृपालुता तथा अशरण शरणादिबिरदावली स्मरणकरि तुलसीदासको जोयहदारुणदुःख ताको भञ्जनकरो हेप्रभु हेराम उदार ॥ ९३ ॥

मू० । काहेतेंहरिमोहिंबिसारो । जानतनिजमहिमामेरेअघतद- पिननाथसम्हारो । पतितपुनीतदीनहितअशरणशरणकहत श्रुतिचारो । हौंनहिंअधमसभीतदीनकिधौंबेदनमृषापुकारो । खगगणिकागजव्याध पांतिजहंतहंहौंहूंबैठारो । अब केहिलाजकृपानिधानपरसतपनवारोफारो । जौकलिकाल प्रबलअतिहोतोतुवनिदेशतेंन्यारो । तौहरिरोषभरोसरोष गुणतेहिभयतेतजिगारो । मसकबिरञ्चिबिरञ्चिमसकसम करऊप्रभावतुम्हारो । यहसामर्थ्य अछतमोहिंत्यागऊनाथ तहांकछुचारो । जनहिननर्कपरतमोंकहडरयद्यपिहौंअति हारो । यहबड़िचासदासतुलसीप्रभुनामऊंपापनजारो ॥ ९४ ॥

टी० । रामजूको बिलम्ब देखिकरि कहतहैं हेहरि अब मोकों काहेते बिसारतहौ अपनी महिमा जानतहो तथा मेरे अघको भीजानेहौ तद्यपिहेनाथनहीं सम्हारो पूर्वकह्यौ जोमहिमाताकों जनावतहैं पतित पावनादि बाना आपको चारों वेद कहत हैं महिमा कहिकरि अब अपनो अघ देखावतहैंकि हम अधमनहीं अर्थात् नानाप्रकारको पापनहीं किये हैं सभीत नाम संसार के प्रवाहतें नहीं डरेहैं दीननाम सर्वसाधनके बलते हीनहोकरिबे पौरुष नहीं हैं किधौं वेदन्हते आपके बिरदको मृषानाम मिथ्या पुकारयौ है अर्थात् हमतो अपनो भलीप्रकार जानतहैं कि अध- मादि जो पूर्वकहे सोहम नहींहैं सोनहीं किन्तुसबहैं इहां काक

कहे तो यह सबदोष रहते आपने पतित पावनादि बिरदको नहीं प्रकट करते तो बूझिपड़ै है कि जैसे राजन्हके निकट खुशामदी मनुष्य सबमिथ्या प्रशंसा करत हैं तैसे वेदऊने आपकी मिथ्या खुशामदी करी है पतित पावनादि गुण आप मो है नहीं चेत आप यह कहो कि वेद न को कह्यौ मिथ्या नहीं हममें पतित पावनादि सर्व गुण हैं बहुत पतित अधमनको हम कृतार्थ किये एक तुमको न ग्रहण करेंगे तो अवश्य ग्रहण कराइबेमो कौन हेतु है तेहपर कहत हैं खग जो जटायु गणिका जो वेश्या जनक पुरमो रही तथा गजेन्द्र व्याधा जो कृष्णचन्द्रके चरणमो तीर मारयो ऐसे अनेक जो पाप रूप जीव इन्हकी पांति जहां तहां हमहूंको बैठारो चेत यह कहो कि हम तुमको कैसे बैठारें तहां यह भाव है कि हे भगवान् आप पतित पावनादि बानाको प्रगट किये सो वेदशास्त्रतें सुनि करि वाकेबलतें जन्म पर्य्यन्त जो कर्त्तव्य ताते हम पतित अधमदीन होवैं तैसोई कर्म करि जन्म वितीत किये जो आप पतित पावनादि यशको नहीं ग्रहण करते तौ हम वेदविदित जो नाना शुभकर्म ताको करि अपनो कल्याण करते यह हेतु ते आपके बानाने मोको पतितन्हके पांति मों बैठास्यो तो पांतिमें बैठारि करि अब कौन लाज आपको लगे है हे कृपा निधान जेहते परोसनेके समय मेरो पत्तल फाड़त हौ अर्थात् सबको इच्छापूर्वक भोजन करायो मोको पांतिते बाहर करत हो इहां तुम्हारो प्राप्ति रूप भोजन ताको पाय पूर्णाभिलाष होनो सोई तृप्ति है अरु संसार निवृत्ति होना सोई क्षुधाकी निवृत्ति ताकी प्राप्ति न होनो सोई पत्तलको फाड़नो कह्यौ है हम संसारके कर्मको भोग करें औ आपको बानारूप यश करहै सो यह रीतिते किनौ कलिकाल अति प्रबल होतो अरु तुम्हारो निदेश नाम आज्ञा तेहतें न्यारो नाम बाहर अर्थात् आपहूतें अधिक प्रबल तथा स्वतंत्र कलिकाल होतो तौ हे हरि रोष नाम कलिकालके क्रोधतें डरके आपको भरोसा किये हैं सो वाहीके भरोसाको करते आपके दोषगुणको गावत हैं सो ताहिके दोषगुणको गावते आपको भजन करत हैं सो तेहिको भजते गारी नाम लाज है इहिके इहां लाजको यह हेतु है कि जन्म पर्य्यन्त आप ऐसे स्वामीको कहाय करि कलिकालको दास होनो यह बड़ी लाज है औ जो परिहरि पाठ होय तौ अर्थ यह है कि जो कलिकाल आपते प्रबल होय तो आपको नहीं ग्रहण किये तें जो को। धन अपनेको

होतहै अरु आपको भरोसतथा अपनो दोष पतितादि अरुआप को गुणपतित पावनादि त्याग करि अपतेही कलिकालको भजते नामसेवन करते तजिगारोको अर्थपहिले अर्थमोलिखे सोई एक अर्थमोहै सो कलिकाल आपतें प्रबल नहींहै काहेकि असक को अशावशाको असक कारक ऐसो प्रभाव तुम्हारो है ऐसेसामर्थ्य के रहते मोको त्यागकरतहौ तौहेनाथ तहांकछु चारोनाम बस है किन्तुनहीं चेतयह कहोकि तुमनरकके भयतेडरे सोनहीं यद्यपि हमअतिहान्योनाम तुम्हारेनाना को भरोसकरि जन्म पर्यन्तअघ- मादिक्रिया करतरहे कोऊशुभकर्म न कियेयह हेतु जन्मकोहारि गये तथापि नरक पड़बेको डर नहीं काहे कि हम ऐसे कोटानि कोटि जीवनरक भोगकरतहैं तैसेएक हमहुंभये चेत यहकहोकि नवडर नहीं तोबारबार पुकारतहौ काहेसे तुलसीदासकोयह बड़ोचासहै की हेप्रभू नामकुंपावन जान्योअर्थात् वेदशास्त्र लोक को प्रसिद्धहैकि भगवन्नामावलंबीको नरकादिदुःखनहीं होत सो अब ऐसो प्रसिद्ध होयगो कि रामनाम करि पाप नहीं छूटत है अर्थात् मेरेनरक पड़तें आपके नामकी महिमा तथाआपकोयश डोकडूबत हैं यह करि बार बार पुकारत हैं सेवक को उचित हैकि आपको नामयशहोय परअपनेस्वामी को यशनजायऐसोकर्त- व्यतायथा भक्तिकरेसो आपके यशतथा नामंकी महिमा रखबे को निमित्त बारबार आपतेपुकारने माचमेरी भक्ति हैआगेजैसी बूझि पड़े सो करो यहभावहै ॥ ९४ ॥

मू० । तऊनमेरेअघअवगुणगनिहैं । जौयमराजकाज सबपरि हरि यहीख्यालउर आनिहैं ।चलिहैं छूटिपुंजपापिन्हकेअससंजस जियजनिहैं । देखिखलनअधिकारप्रभुसोंमेरी भूरिभलाईभ- निहैं । हंसिकरिहैपरतीतिभक्तकीभक्तशिरोमणिमनिहैं । ज्यों त्यौंतुलसिदासकोशलपति अपनायहि परि बनिहैं ॥ ९५ ॥

टी० । हे भगवन् मोको ग्रहण वितरेक आप की छुट्टी नहीं चेत कहोकि तुमपापात्माहौ तुम्हारोग्रहण कैसे होय सो पापात्मा मैंहौं यहबात सत्यहैपरमैं पापीहौंतसे आपसुनोतबहु मेरे अघ औगुण को नहींगनि सकैंगे जो यमराज सब काज नामें समस्त ब्रह्माण्ड को अधिकार त्यागकरियहीख्याल नामें केवल मेरेही पाप को हिसाब अपने हृदय मो लै आवेंगे अर्थात् जितने पाप मेरेहैं ताके हिसाब